Index (सूची) *निम्नलिखित किसी भी टॉपिक को क्लिक करें और सीधे उसी टॉपिक की PDF पेज पर पहुंचे ।*

PDF Index

- शिक्षण विधि

❑ Video निम्नलिखित किसी भी टॉपिक को क्लिक करें और सीधे उसी टॉपिक Video पर पहुंचे ।

✓संपूर्ण "संस्कृत शिक्षण विधियाँ **PDF** के लिए क्लिक करें -

Video Index

❑ निचे दी गयी किसी भी विधि का वीडियो प्राप्त करने के लिए यहीं पर निचे उस विधि के नाम पर क्लिक करें -

✓संपूर्ण "संस्कृत शिक्षण विधियाँ **PDF** के लिए क्लिक करें -

– शिक्षण विधि

Video Part - 1

संस्कृतशिक्षणविधयः

- शिक्षण विधि

1. I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधय: ✓

II. संस्कृतभाषा-शिक्षण-शिद्धान्ता:

Sky Educare www.skyeducare.com

I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधय:

- **भाषा** एक ऐसी व्यवस्था जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं, और दूसरों के विचार एवं अभिप्रायों को हम स्वयं समझने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

(1) 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।

(3) स्वीट के अनुसार : ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।

I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधय:

- भाषा शिक्षण उद्देश्य - ग्रहण और अभिव्यक्ति
- संस्कृतभाषाशिक्षण उद्देश्य -
  - भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्रचार एवं संरक्षण करना।
  - भारतीय संस्कृति का ज्ञान करके एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण करना।
  - राष्ट्र के प्रति, संस्कृति के प्रति समादर व भावात्मक एकता का विकास करना ।
  - विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान प्रदान करना।
  - संस्कृत बोधपूर्वक **सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने** की क्षमता का विकास करना।
  - संस्कृत भाषा व साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।

Sky Educare

I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधय:

शिक्षण – कक्षा में पाठ्यक्रम को लेकर शिक्षक व छात्र के बीच होने वाली सुव्यवस्थित अंतः क्रिया **'शिक्षण'** कहलाती है ।

शिक्षण-विधि – **शिक्षण कार्य को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करना** ही शिक्षण विधि कहलाता है। शिक्षण को सम्यक ढंग से चलाने के लिये शिक्षणविधि अत्यन्त आवश्यक है।

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

- परंपरागत / प्राचीन
- नवीन /आधुनिक
- नवीनतम उपागम

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

- परंपरागत / प्राचीन
  - 1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा
  - 2. व्याकरणानुवाद विधि → भंडारकरविधि
- नवीन /आधुनिक
- नवीनतम उपागम

I. संस्कृतशिक्षणविधयः

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि या निर्बाधविधि या सुगमविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि या समन्वयविधि
7. मूल्यांकन विधि

I. संस्कृतशिक्षणविधयः

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. सूक्ष्म शिक्षण
2. आगमन उपागम
3. समस्या समाधान
4. प्रयोजन विधि
5. दल शिक्षण
6. पर्यवेक्षण अध्ययन विधि
7. कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण प्रतिमान
8. अभिक्रमित अनुदेशन
9. सग्रंथन उपागम
10. निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण

संस्कृतशिक्षणविधय:

Video Part - 2

- शिक्षण विधि

हमारा YouTube चैनल (स्काई एज्युकेयर) सब्सक्राइब करें।

सब्सक्राइब करने के लिए यहाँ क्लिक करें

SUBSCRIBE

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन | नवीन /आधुनिक | नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि

- यह प्राचीनतमविधि है ।
- मुख्योद्देश्य (चतुष्टय पुरुषार्थ)धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति।
- इसे गुरुकुलपद्धति, व्याकरणपद्धति, प्राचीनपद्धति, पंडितपद्धति, पाठशालाविधि आदि नाम से भी जाना जाता है ।
- उपनयन संस्कार से विद्यारंभ, शिष्य के लिए छात्र शब्द का प्रयोग।

2. व्याकरणानुवाद विधि → भंडारकरविधि

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि

- गुरु शिष्य संबंध पिता पुत्र के समान।
- संस्कृत-शास्त्रों अध्ययन, आदर्श पंडित निर्माण, उच्चारण सामर्थ्य संपादन, स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पादन, आत्मानुशासन, तर्कशक्ति आदि गुणों का विकास।

2. व्याकरणानुवाद विधि

→ भंडारकरविधि

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

Sky Educare

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

2. व्याकरणानुवाद विधि

→ भंडारकरविधि

I. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

- वैदिक **शिक्षा मौखिक** होती थी। **वेद मंत्रोच्चार का बार बार मौखिक उच्चारण** करके कंठस्थीकरण होता था।
- छात्रों द्वारा किए गए **उच्चारण संबंधी दोषों** को शिक्षक व्यक्तिगत रूप से दूर करता था।
- प्रतिदिन नवीन पाठ प्रारंभ करने से पूर्व **गत पाठ का मूल्यांकन** किया जाता था और अब तक पढ़े गए पाठों के **मुख्य बिंदु की आवृत्ति** के बाद ही उन्हें आगे बढ़ाया जाता था।
- **कंठस्थीकरण** पर अधिक बल था।
- **लाभ** : छात्रों का उच्चारण शुद्ध होता था व मौखिक अभिव्यक्ति सशक्त होती थी।

I. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- जटिल विषयों को समझने में याद रखने में सुविधा होती थी।
- **उद्देश्य "गागर में सागर" (घटे समुद्रपूरणम्)भरना था।**
- संस्कृत व्याकरण व दर्शन शिक्षण की प्राचीनतम विधि है।
- इसके द्वारा नियमों को **सूत्ररूप** में कंठस्थीकरण किया जाता था।
- **लाभ** : जटिल विषयों को समझने में याद रखने में सुविधा होती थी।

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- Sk Katariya
Sky Educare

Sky Educare

- **कंठस्थीकरण** पर बल देते हुए वैदिक मंत्रों की बार-बार आवृत्ति करके उन्हें कंठस्थ करवाया जाता था।
- वैदिक मंत्रों के सस्वर पाठ को **परायण कहते** थे, ऐसा करने वाले को "**पारायनिक**" कहा जाता था।

- **लाभ :** इसमें प्राप्त ज्ञान को स्मृति में संचित करने पर बल दिया जाता था।

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

Sky Educare

- **वाद-विवाद - किसी विषय पर चर्चा की एक औपचारिक विधि है।** वाद-विवाद में दो परस्पर विपरीत विचारों के समर्थक अपना-अपना तर्क रखते हैं और दूसरे के कथनों का खंडन करने का प्रयत्न करते हैं।

- **शास्त्रार्थ तथा संवाद इसी के उदाहरण हैं।**

- **लाभ :** तर्कशक्ति विकास और भाव प्रकाशन की शक्ति का विकास ।

I. पाठशाला विधि /

गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- **छात्रों की शंकाओं का समाधान करने** के लिए गुरु व्याख्या विधि अनुसरण करते थे। व्याख्यान के 6 अंगो को श्लोकबद्ध किया गया है :

पदच्छेदः पदार्थोक्तिः विग्रहो वाक्ययोजना।
आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम् ॥

- **लाभ :**
  - **विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती थी।**
  - **मानशिक किर्याशीलता का विकास होता था।**
  - **भाषा पर अधिकार होता था।**

I. पाठशाला विधि /

गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- प्रश्नों के माध्यम से व्याख्यान होता था, प्रत्येक प्रश्न के पश्चात छात्र उनकी आवृत्ति करते थे, इस प्रकार संपूर्ण व्याख्यान समाप्त होता था ।

- **लाभ** : जिज्ञासु छात्र सक्रिय होते थे
  तर्क व निरीक्षण शक्ति का विकास होता था।

I. पाठशाला विधि /
गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- विषय वस्तु को रुचिकर बनाने के लिए उस समय बीच-बीच में कथाएं सुनाई जाती थी जैसे हितोपदेश पंचतंत्र आदि की।
- **लाभ :**

  अध्ययन को रुचिकर बनाने व सरल बनाने में सहायक।

I. पाठशाला विधि /
गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

Sky Educare www.skyeducare.com

- गुरु के अनुपस्थिति की स्थिति में मेधावी छात्र गुरुकुल के अन्य छात्रों को पढ़ाते थे।
- **लाभ :**

  शिक्षण करवाने वाले छात्रों में आत्मविश्वास आता था।

  मेधावी छात्रों को शिक्षक प्रशिक्षण मिल जाता था।

I. पाठशाला विधि /
गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- कई बार गुरु विषय को स्पष्ट करने के लिए लंबे लंबे भाषण व व्याख्यान देते थे कथा आदि का सहारा लेते थे
- **लाभ :**

इससे छात्रों को किसी विषय पर विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जाती थी।

I. पाठशाला विधि /
गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- व्याकरण भाषा का प्राण तत्व है भाषा के नियम व्याकरण में है होते इसलिए भाषा को पढ़ने के लिए व्याकरण का ज्ञान दिया जाना आवश्यक था। वेदों के अध्ययन के समय पुराने समय में व्याकरण का विशेष पठन-पाठन होता था।
- **लाभ :**

भाषा का शुद्ध परिष्कृत व परिमार्जित ज्ञान प्राप्त हो जाता।

1. पाठशाला विधि।

गुरुकुलपरंपरा

• पाठशाला विधि के गुण और दोष

गुण	दोष
1. चरित्र निर्माण में सहायक।	1. मंदबुद्धि बालकों का पिछड़ जाना।
2. मेधावी छात्रों का अधिक विकास होना।	2. मनोवैज्ञनिक शिक्षण का अभाव।
3. भारतीय संस्कृति व संस्कृत साहित्य के ज्ञान की प्राप्ति।	3. शिक्षण में अंत: क्रिया का अभाव।
4. शुरू में होने वाला मौखिक कार्य शिक्षण सिद्धांत के अनुरूप।	4. शारीरिक व सामाजिक विकास नहीं।
5. शुद्ध उच्चारण का विकास व उच्चारण दोष समाप्ति।	5. कठोर अनुशासन, नीरस शिक्षण में नीरसता।
6. कण्ठस्थीकरण का विकास।	6. मौखिक पक्ष का ही विकास लेखन का नहीं।
7. स्मरण शक्ति का विकास।	7. पाठ्य सहगामी क्रियाओं को स्थान नहीं।

REET-CTET-MPTET-All TET

- शिक्षण विधि

3

I. संस्कृतशिक्षणविधयः

- Sk Katariya
Sky Educare
YouTube

परंपरागत / प्राचीन | नवीन /आधुनिक | नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

2. व्याकरणानुवाद विधि
भंडारकरविधि

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें
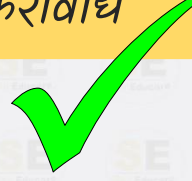
2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- यह विधि 1835 में **लार्ड मैकाले** द्वारा विकसित शिक्षा पद्धति का ही रूप है ।
- **डॉ रामकृष्ण गोपाल भंडारकर** द्वारा इस विधि का प्रारंभ किया गया इसलिए इसे **भंडारकर विधि भी कहते** हैं ।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

Sky Educare

- इस विधि पर डॉ रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने दो पुस्तकें लिखी हैं ।

  I **मार्गोपदेशिका** 2 **संस्कृत मन्दिरान्त**
- इस विधि पर पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रभाव भी दिखाई देता है
- **संस्कृत से अंग्रेजी और अंग्रेजी से संस्कृत में अनुवाद करना।**
- इस विधि पर **वामन शिवरामाप्टे** ने भी एक पुस्तक लिखी है। जिसका नाम जिसका नाम "स्टूडेंट्स् गाइड टु संस्कृत कांपोज़ीशन" है।
- इस विधि के माध्यम से कंठस्थीकरण की अपेक्षा बोध शक्ति को जाग्रत करने और अभ्यास पर बल दिया जाता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

Sky Educare

- **इस विधि के द्वारा सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण पाठ की उदाहरण सहित व्याख्या की जाती है, उस व्याकरण नियम का पर्याप्त अभ्यास कराया जाता है अभ्यास के लिए नवीन शब्द बताया जाते हैं**
- **उन वाक्यों के अभ्यास हेतु शब्दकोश से नए नए शब्दों का बोध कराया जाता है।**

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- व्याकरण अनुवाद विधि के चार सोपान हैं -
  1. व्याकरणपाठ (उदाहरण सहित व्याख्या व अभ्यास)
  2. प्रथम भाषा संस्कृत से द्वितीय भाषा अंग्रेजी में अनुवाद
  3. द्वितीय भाषा अंग्रेजी से प्रथम भाषा संस्कृत में अनुवाद
  4. शब्दकोश का ज्ञान

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- **गुण** -

✓ इस विधि में स्थूल से सूक्ष्म की ओर, सरल से कठिन की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर मनोवैज्ञानिक नियमों पर ध्यान दिया जाता है।

✓ कठिन नियम हटाकर सरल वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता है।

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

Sky Educare

- दोष -
  - ✓ उच्चारण, गति प्रवाह, साहित्य का अभाव।
  - ✓ भाषण व श्रवण का विकास नहीं होता हो पाता।
  - ✓ व्याकरण अनुवाद पर अधिक बल दिया जाता है।

Video - 4

- Sk Katariya

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1835 ई. के पश्चात लार्ड मैकाले द्वारा दी गई शिक्षा पद्धति के बाद संस्कृत शिक्षण में जो विधियां अपनाई गई वह नवीन या आधुनिक शिक्षण विधियां है तथा इससे पहले कि सभी शिक्षण विधियां प्राचीन शिक्षण विधियां हैं।

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि या निर्बाधविधि या सुगमविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि या समन्वयविधि
7. मूल्यांकन विधि

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- समर्थक : डॉ. वेस्ट महोदय । प्रचलन : अंग्रेजों के आगमन के साथ ही हुआ था ।
- इसमें कक्षा के स्तरानुसार विषय वस्तु को वर्गीकृत किया जाता है।
- भाषा शिक्षण की लोकप्रिय विधि पाठ्यपुस्तक विधि है।
- इसमें **क्रमशः वर्णमाला, छोटे शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों** का ज्ञान करवाया जाता है। वाचन कौशल पर अधिक बल ।
- इस शैली से संस्कृत की पाठ्यपुस्तक भी तैयार की गई है।
- परीक्षा व अभ्यास कार्य का आधार पाठ्यपुस्तक ही है।
- **शिक्षण का केंद्र पाठ्यपुस्तक को माना गया है।**
- व्याकरण का ज्ञान प्रसंग आने पर ही दिया जायेगा।
- इन पाठ्य पुस्तकों का उद्देश्य कि इन्हें पढ़कर छात्र शिक्षक की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

- **गुण एवं दोष**

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- **गुण**
- नियमबद्ध एवं उद्देश्यनिष्ठ शिक्षण में सहायक है।
- यह छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि करने में सहायक है।
- स्वाध्याय प्रवृत्ति का विकास संभव। छात्रों हेतु पर्याप्त अभ्यास के अवसर।
- अध्यापक की अनुपस्थिति में भी अध्ययन संभव।
- समय, श्रम धन की बचत होती है।
- **दोष**
- शिक्षण केवल पुस्तक आधारित हो जाता है।
- व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धान्त की अवहेलना होनी है।
- सभी विधार्थी एक ही पाठ्य पुस्तक का अध्ययन करते है।
- पाठ्य-पुस्तक उद्धेश्य प्राप्ति का साधन होता है शिक्षक उसे ही साध्य मान लेते है।
- केवल सैद्धान्तिक ज्ञान दिया जाता है, व्यावहारिक प्रयोगात्मक नहीं।

Video - 5

प्रत्यक्षविधि विधि

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- प्रत्यक्ष विधि (Direct method) **निर्बाधविधि / सुगमविधि / प्राकृतिक विधि** के नाम से भी जाना जाता है।
- भाषा शिक्षण की **श्रेष्ठ विधि।**
- इस विधि में प्रत्यक्ष से अर्थ "कार्य करके दिखाना" से है इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग अंग्रेजी भाषा में 1901 में फ्रांस में "गुईन" ने किया । (अंग्रेजीभाषाशिक्षण में)
- **पर्वतक : प्रो. वी. पी. वॉकील। समर्थक : जेसपर्सन गेटे।**
- **विरोधी : डॉ. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर एवं वामन शिवराम आप्टे।**
- **भारत में :** सबसे पहले "अल्फिन स्टोन हाई स्कूल बम्बई" में प्रो.वी. पी. वॉकील संस्कृत शिक्षण में 1951 में प्रयुक्त किया था।
- यह विधि 'वाइलटर पैनफील्ड के "**Mother's Methods** " पर आधारित है।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- इस विधि में बालक को बिना व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराएं भाषा सिखाई जाती है अर्थात भाषा के माध्यम से ही भाषा सिखाई जाती है।
- इस विधि में बालक की मातृभाषा बिना मध्यस्थ बनाएं अन्य भाषा सिखाई जाती है ।
- प्रत्यक्ष विधि में श्रव्य दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है प्राथमिक कक्षाओं हेतु यह विधि अत्यधिक उपयोगी है।
- ***यह विधि मौखिक अभ्यास पर अधिक जोर देती है। (प्रत्यक्ष विधि में मात्र भाषा का प्रयोग करना "मौखिक विधि / संवादविधि है")***
- काठिन्य निवारण के लिए : दृश्य श्रव्य साधनो का प्रयोग या पारस्परिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
- उद्देश्य : ***संस्कृतभाषाशिक्षण*** में संस्कृतमय वातावरण निर्माण करना।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- **गुण :**
- संस्कृत शब्दोच्चारण एवं अभिव्यक्ति का विकस संभव हो पाता है।
- संस्कृतभाषाशिक्षण में संस्कृतमय वातावरण निर्माण करना।
- भाषा शिक्षण की श्रेष्ठ विधि।

- **दोषः**
- व्याकरण ज्ञान का आभाव रहता है।
- इस विधि में अधिक से अधिक सुनने व बोलने पर बल दिया जाता है किंतु लेखन और वाचन की अवहेलना की जाती है।
- छात्रों को शब्दावली का बहुत ही सीमित ज्ञान हो पाता है।

नवीनशिक्षणविधय:

Video - 6 हरबर्टीय पंचपदी

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

अधिक उन्नत एवं समर्पित कोर्स के लिए – Download Mobile App Download

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- हरबर्ट एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक थे उनके सिद्धांतों के आधार पर उनके शिष्यों ने इस **पंचपदी विधि** को प्रस्तुत किया।
- **5 पदों के द्वारा** शिक्षण कार्य करवाए जाने के कारण इस शिक्षण विधि को हरबर्ट की पंचपदी शिक्षण विधि के नाम से जानते हैं।
- संस्कृत शिक्षण में भी इस विधि को उपयोग में लाया जाता है ।
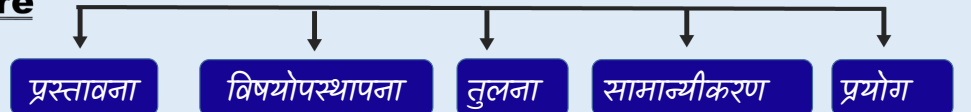
प्रस्तावना → विषयोपस्थापना → तुलना → सामान्यीकरण → प्रयोग

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

Sky Educare

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- शिक्षाशास्त्री हरबर्ट ने शिक्षण हेतु **चार सोपानो** से युक्त एक शिक्षण प्रणाली तैयार की –
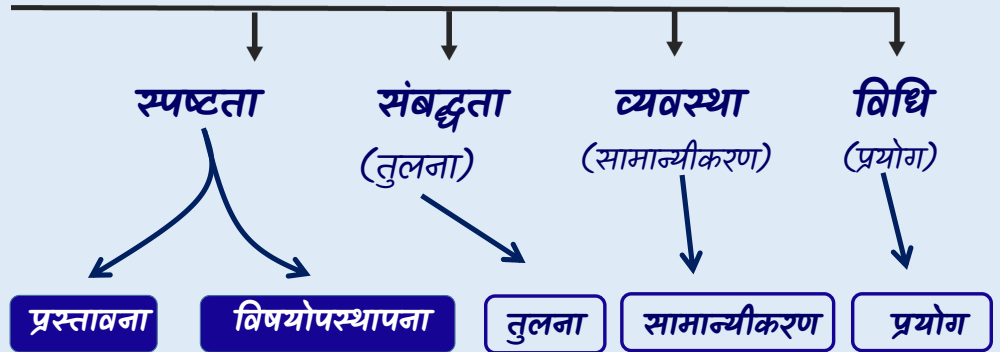
हरबर्ट के बाद उनके दो शिष्य **शिलर** एवं **रेन** ने प्रथमसोपान-**स्पष्टता** को दो भागों (**प्रस्तावना, विषयोपस्थापना**) में विभाजित कर दिया

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | **विषयोपस्थापना** | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- इस विधि में नवीन पाठ को प्रस्तुत करने से पहले, शिक्षक द्वारा छात्रों के पूर्व ज्ञान को जानने के लिए - प्रश्न, चित्र - मानचित्र, श्लोकाआदि द्वारा नवीन ज्ञान की ओर ले जाना प्रस्तावना है।
- पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए एवं साथ में छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करते हुए नवीन पाठ की प्रस्तावना के माध्यम से अध्यापक के द्वारा पाठ की उद्घोषणा की जाती है।
- शिक्षक चार पांच प्रश्नों के माध्यम से वार्तालाप के द्वारा छात्रों को तैयार करता है और उनके पूर्व ज्ञान को जानकर नवीन ज्ञान की ओर ले जाता है जिसमे अन्तिम प्रश्न समस्यातमक होना आवश्यक है जिसके उत्तर स्वरूप शिक्षक नवीन पाठ प्रस्तुत करता है । (जिसे पाठ योजना में प्रस्तावनाकौशल कहते हैं)

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- मुख्य उद्देश्य : पाठ को पूर्ण रूप से छात्रों के सामने रखना है।
- इस सोपान में उद्देश्य कथन के साथ विषय का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। और इसके साथ ही नवीन पाठ का शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो जाता है।
- भावानुसार विषय वस्तु को दो - तीन भागों में विभक्त करके प्रस्तावना के बाद प्रस्तुत किया जाता है ।
- इसमें - आदर्श वाचन (शिक्षक द्वारा) अनुकरण वाचन (छात्रों द्वारा) के बाद विभिन्न विधियों से काठिन्य निवारण, अशुद्धि संसोधन आदि प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से किया जाता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

Sky Educare

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- शिक्षण के दौरान जिन जिन शब्दों और भावों का अर्थ समझने में कठिनाई होती है उन शब्दों के भावों को स्पष्ट करने के लिए विविध दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग करते हुए छात्रों के द्वारा अर्जित ज्ञान से वर्तमान पाठ की तुलना (अमूर्तीकरण) करते हुए विषयवस्तु को स्पष्ट किया जाता है।
- **मुख्य उद्देश्य** : विषयवस्तु को स्पष्ट करना।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- मुख्य उद्देश्य : विषय वस्तु को सार रूप में स्पष्ट करना।
- पाठ की तुलना के बाद इसमें पढ़े गए पाठ के निष्कर्ष अथवा सार पर छात्र पहुंचने का प्रयन्न करते हैं। छात्र निष्कर्ष पर आते हैं।
- इसके अंतर्गत नियम निर्माण, सिद्धांत निर्माण, पुनरावृति प्रश्न, सामान्य भाव की कविता, बोध प्रश्न, विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न, आदि आते हैं
- इसका व्याकरण पाठ में विशेष महत्व है। व्याकरण में नियमीकरण या नियमितीकरण कहते हैं।
- गद्य और पद्य शिक्षण पाठ में मैं पाठ का सार अध्यापक द्वारा बताना तथा छात्रों से प्रश्नों द्वारा मुख्य भाव ज्ञात करना , गद्य पद्य में इसे अध्यापक कथन कहा जाता है।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- प्रयोग का मुख्य उद्देश्य : ज्ञान को स्थाई करना है।
- इसमें अभ्यास कार्य करने के लिए गृह कार्य दिया जाता है।
- यह मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार का होता है
- इसके अंतर्गत कक्षा कार्य एवं गृह कार्य आते हैं
- नए ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए और छात्रों को अर्जित ज्ञान को उपयोग में लेने के योग्य बनाने के लिए इस सोपान को काम में लिया जाता है।

7 शिक्षण विधि

नवीनशिक्षणविधय:

- पाठ्यपुस्तकविधि
- प्रत्यक्षविधि
- हरबर्ट की पंचपदी
- विश्लेषणविधि
- संरचनाविधि
- समवायविधि
- मूल्यांकन विधि

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- "**पूर्णादंशं प्रति**" शिक्षण सूत्र पर आधारित होती है अथार्त यह विधि **पूर्ण से अंश की ओर** इस शिक्षण सूत्र पर आधारित है।
- इसमें शिक्षक पहले संपूर्ण पाठ की विषय वस्तु को एक साथ संक्षेप में प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात पाठ के विभिन्न अंशों का शिक्षण करता है।
- संस्कृत शिक्षण में विशेषत: व्याकरण एवं कथा करते समय इसका प्रयोग अधिक उपयोगी है।
- **लाभ** : एक साथ संक्षेप में विषय वस्तु प्रस्तुत करने से शिक्षण रुचिकर हो जाता है ।
- छात्र सीखने के लिए अभी प्रेरित होते हैं ।

- Sk Katariya

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- ***वाक्यस्वरूप*** *या वाक्य की संरचना पर बल देकर शिक्षण करवाया जाता है।*
- *वाक्य रचना के दौरान* ***व्याकरणात्मक*** *ज्ञान दिया जाता है साथ ही* ***शब्दकोष का ज्ञान*** *भी करवाया जाता है ।*
- *जैसे- कर्ता, कर्म, अव्यय, उपसर्ग, निपात आदि का ज्ञान करवाना।*
- *इस विधि का प्रयोग प्रत्यक्ष विधि को सफल बनाने के लिए होता है।*

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

Sky Educare www.skyeducare.com

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- ***संयुक्तविधि / समवायविधि/ समन्वयविधि/ समाहारविधि***
- *बोकिल की नवीनविधि, आप्टे की मनोवैज्ञानिकविधि, तथा हू परिकर की विश्लेषण-संश्लेषणात्मक विधि का मिश्रण होने पर यह संयुक्त विधि समवाय विधि कहलाती है।*
- *दूसरी विधियों की उपेक्षा करने की बजाय समस्त विधियों के श्रेष्ठ गुणों को लेकर उनका संश्लेषण कर परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करना संयुक्त विधि है।*
- *समवाय विधि को समझने का ढंग निम्न प्रकार है –*
- *जैसे – अध्यापक गद्य का कोई पाठ पढ़ा रहा है और उसके बीच में व्याकरण का कोई बिन्दु आ गया तो अध्यापक वहीं पर उसे व्याकरण का ज्ञान सीखाएगा या अन्य इससे संबंधी कोई बात आ गई तो साथ ही चर्चा की जाती है।*

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- ***यह हरबर्ट की पंचपदी विधि का ही विकसित रूप है।***
- *यह एक उद्देश्यनिष्ठ विधि है जो छात्र के स्थाई ज्ञान को परखती है।*
- *सबसे पहले पाठ योजना के समय पाठ का उद्देश्य निश्चित कर छात्र के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को देखा जाता है, साथ ही व्यवहार परिवर्तन हेतु आवश्यक क्रियाओं को समाहित किया जाता है।*
- *यह विधि शिक्षण के प्रत्येक सोपान के अंत में काम में ली जाती है।*
- *मूल्यांकन का अर्थ - भावात्मक रूप से निर्णय देना।*
- *मूल्यांकन प्रणाली के शिक्षण सूत्रों का क्रम –*

उद्देश्य	व्यवहाररूप
पाठ्यबिंदु	शिक्षणकार्य
छात्रकार्य	मूल्यांकन

- *यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि मूल्यांकन साथ-साथ चलता है।*

शिक्षण विधि

संस्कृतशिक्षणस्य 8

नवीनतमोपागमः

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन | नवीन /आधुनिक | नवीनतम उपागम

1. सूक्ष्म शिक्षण
2. आगमन उपागम
3. समस्या समाधान
4. प्रयोजन विधि
5. दल शिक्षण
6. पर्यवेक्षण अध्ययन विधि
7. कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण प्रतिमान
8. अभिक्रमित अनुदेशन
9. सग्रंथन उपागम
10. निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण

संस्कृतशिक्षणस्य नवीनतमोपागम:

नवीनतमोपागम:

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सम्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- ***इसका विकास सबसे पहले एलन द्वारा 1963 ई. में किया गया।***
- ***परिभाषा:*** *शिक्षण अभ्यास की व्यवस्था जिससे किसी निश्चित शिक्षण व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ नियंत्रित परिस्थितियों में शिक्षण का अभ्यास संभव हो पाता है।*
- *कक्षा के आकार सीमित होता है । समय सीमा कम करना।*
- *पाठ के आकार को कम करना। शिक्षण कौशल को कम करना।*
- ***उद्देश्य :*** *एक टीचर प्रशिक्षु को सीखने और नए शिक्षण कौशल को नियंत्रित परिस्थितियों में आत्मसात् करने योग्य बनाना। एक टीचर प्रशिक्षु को शिक्षण में विश्वास करने योग्य बनाना।*

नवीनतमोपागम:

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सम्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- ***समय सीमा : सूक्ष्म शिक्षण के भारतीय नमूने के अनुसार जो कि NCERT द्वारा विकसित किया गया है वो इस प्रकार है:***
- *पढ़ाना: 6 मिनट*
- *फ़ीडबैक: 6 मिनट*
- *पुनर्योजना: 12 मिनट*
- *पुनर्शिक्षण: 6 मिनट*
- *पुनर्फ़ीडबैक: 6 मिनट*
- *कुल: 36 मिनट*
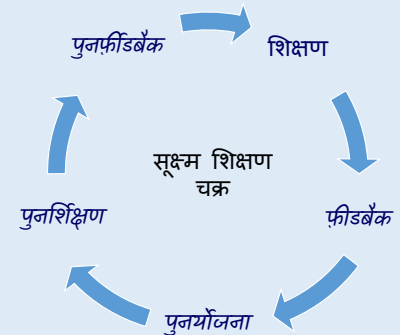
- ***सूक्ष्म शिक्षण का चक्र के तहत यह चलता है ।***

नवीनतमोपागम:

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- इस विधि में प्रत्यक्ष अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन कर नियम निकाले जाते है तथा ज्ञात तथ्यों के आधार पर उचित सूझ बुझ से निर्णय लिया जाता है । इसमें शिक्षक छात्रों को अध्ययनप्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, एवं विशिष्ट से सामान्य की ओर करवाते है ।

नवीनतमोपागम:

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- **समस्या समाधान विधि : इसमें सर्वप्रथम विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतीपूर्ण परिस्थिति पैदा की जाती है ताकि विद्यार्थियों उस समस्या के समाधान हेतु विविध प्रयास करते हुए , शिक्षक के निर्देशन में उसका समाधान करता है।**

- **पर्वतक : थॉमस एवं रिस्क।**
- **उच्च शिक्षण हेतू उपयोगी है।**

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- **सर्वप्रथम यह विचार जॉन डी.वी.** ने दिया।
- इस विधि के प्रवर्तक जॉन डी.वी. के शिष्य 'किल पेट्रिक' मने गए हैं।
- इस विधि में बालक को स्वयं अपनी रुचि के अनुसार विषय वस्तु व क्रिया में सामंजस्य स्थापित करते हुए सीखने की क्रिया करने का अवसर दिया जाता है।
- ये पद्धतियाँ विद्यार्थी को भयमुक्त वातावरण से निकालकर स्वतंत्रता एवं
- सुगमता से कार्य करने को प्रेरित करती हैं।
- **लाभ :** इस से अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास के साथ साथ अन्वेषण योग्यता, निर्णय शक्ति, मूल्यांकन क्षमता, सृजनात्मक, रचनात्मक प्रवृति आदि कौशलों का विकास होता है।

नवीनतमोपागमः

Sky Educare www.skyeducare.com
Sky Educare www.skyeducare.com
Sky Educare www.skyeducare.com

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- **समूह शिक्षण / सहकारिता शिक्षण / टोली शिक्षण।**
- दल शिक्षण विधि, यह एक नवाचार विधि है।'दल' शब्द का अर्थ होता है समूह अर्थात् जब किसी कक्षा-कक्ष में विशेषज्ञ शिक्षक समूह द्वारा अध्यापन कार्य किया जाता है।
- **इसके ३ सोपान हैं -**
- **१. योजना बनाना , २. व्यवस्था करना , ३. मूल्याङ्कन करना।**

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- इस विधि में विद्यार्थी अपने आवंटित कार्य को शिक्षक की देखरेख में स्वतंत्र रूप से करते है। इस के अनुसार छात्रों को अध्ययन सम्बन्धी कुछ कार्य बता दिये जाते है और वे अपने अपने स्थान पर बैठे बैठे बताए हुए कार्य को करते रहते है और शिक्षक वहीं उनके कार्य का निरीक्षण व निर्देशन करता है।
- 1. निर्देशित स्वाध्याय प्रणाली में छात्र और शिक्षक दोनो क्रियाशील रहते है।
- 2. इस प्रणाली में छात्रों की व्यक्तिगत क्रियाओं, प्रयासों को अधिक महत्व दिया जाता है।
- 3. यह पद्धति छात्रों की स्वाध्याय का अधिक अवसर दिया जाता है, जिससे स्वाध्याय की प्रवृति विकसित होती है।
- 4. उसमें शिक्षक की मुख्य भूमिका छात्रों की सहायता करना एवं उन्हें अध्ययन के लिये निर्देशन देना होता है।
- प्रत्येक छात्र को अपनी क्षमता तथा योग्यता के अनुसार करने का अवसर प्राप्त होता है।
- इस पद्धति के अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्रों के मध्य मधुर सम्बन्ध स्थापित होते है।

- Sk Katariya

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- कम्प्यूटर आधारित शिक्षण विधि : कंप्यूटर, सूचना और प्रसार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सीखने और प्रशिक्षण की विधि है।
- कंप्यूटर का इस्तेमाल करके विषय वस्तु (दृश्य - श्रव्य सामग्री) के माध्यम छात्रों तक पहुंचाया जाता है।
- उनका उपयोग करके विद्यार्थियों के लिए तीव्र गति से, परिशुद्धता के साथ काम करना संभव हो जायेगा। उनके लिए पढ़ाई करना आसान हो जायेगा। कंप्यूटर उनको जल्दी विद्या ग्रहण करने और कार्य कुशल बनने में सहायता प्रदान करेगा।
- छोटी उम्र में सीखना आसान होता है। बचपन में ही कंप्यूटर सहायक अधिगम का प्रयोग करने से वे अधिक सक्षम बनेंगे। उन्हें बचपन से तकनीकी चीजों को इस्तेमाल करने का अभ्यास हो जायेगा। वे बड़े होकर इसमें निपुण हो जायेंगे।

- Sk Katariya

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक और छात्रों के मध्य अंत: क्रिया महत्वपूर्ण होती है इस सिद्धांत पर आधारित अभिक्रमित उपागम होता है।
- स्मिथ व मूरे (Smith and moore) के शब्दों में, अभिक्रमित अनुदेशन किसी अधिगम सामग्री को क्रमिक पदों की श्रृंखला में व्यवस्थित करने वाली एक क्रिया है, जिसके द्वारा छात्रों को उनकी परिचित पृष्ठभूमि से एक नवीन तथा जटिल प्रत्ययों, सिद्धांतों तथा अवबोधों की ओर ले जाया जाता है।''
- छात्र प्रतिपुष्टि व पुनर्बलन द्वारा क्रमबद्ध तरीके से सीखता है जिसके दो भेद हैं -रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन एवं दूसरा है - शाखिये अभिक्रमित अनुदेशन।

- Sk Katariya
Sky Educare

नवीनतमोपागमः

Sky Educare www.skyeducare.com Sky Educare www.skyeducare.com Sky Educare www.skyeducare.com

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन

- संग्रथन उपागम

- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- इस विधि में छोटे-छोटे वाक्यों के आधार पर विषय प्रस्तुतीकरण किया जाता है। सरलता से कठिनता की ओर बढ़ने के लिए यह बनाई गई विधि है।
- इसे आंग्ल भाषा में स्ट्रक्चरल अप्रोच कहते हैं।

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- संग्रथन उपागम
- निदानात्मक एवं उपचारात्मकशिक्षण

- शिक्षक छात्रों की शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं का पता लगाकर उन्हें दूर करता है।
- समस्या के कारणों का पता लगाना 'निदान' कहलाता है।
- समस्या के कारणों का पता लगाकर समाधान करना दूर करना 'उपचार' कहलाता है।

9

शिक्षण विधि

संस्कृत

भाषा-शिक्षण सिद्धान्ताः

- Sk Katariya

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सिद्धान्ताः

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- Sk Katariya
Sky Educare

- किसी भी भाषा शिक्षण के सफलता के लिए बनाए गए नियम जो भाषा शिक्षण के आधारस्वरूप होते हैं "भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धांत" कहलाते हैं।
- संस्कृत भाषा शिक्षण की विशेषताओं को ध्यान में रखकर उस की सफलता के लिए बनाए लिए नियम संस्कृत भाषा शिक्षण के सिद्धांत कहलाते हैं।
- भाषा शिक्षण सिद्धांतों का अनुसरण करके ही भाषा शिक्षण को सफल बनाया जा सकता है।

- Sk Katariya
Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- **स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः**
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

प्रकृतिवादी / स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः

स्वाभाविकता का अर्थ होता है किसी भी भाषा को बिना किसी दबाव के स्वाभाविक रूप से घर के वातावरण में सीखना। जब बालक घर में भाषा को सीखता है तो वह भाषा को स्वाभाविक रूप से सीखता है। अर्थात उस भाषा को बोलने वाले लोग उसके आसपास मौजूद होते हैं और वह उन सब की बातों को सुन सुनकर बिना किसी व्याकरण ज्ञान की सहजता से ही उस भाषा को सीख लेता है।

महत्वपूर्ण बिंदु - इस सिद्धांत के अंतर्गत भाषा स्वभाव से ही सीखी जाती है।

भाषा सीखने के लिए भाषा कौशलों के स्वाभाविक कर्म श्रवण भाषण पठन लेखन को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

प्रारंभिक अवस्था में लिखित पक्ष की अपेक्षा मौखिक पक्ष (श्रवण एवं भाषण) पर अधिक बल देना चाहिए। अध्यापक संस्कृत भाषा में व्यवहार करें।

संस्कृत श्लोक एवं बाल गीतों का आयोजन हो। शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराएं।

इसमें बालक भय रहित एवं कृत्रिमता से रहित अधिगम करता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ताः

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- **क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः**
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

- भाषा में दक्षता प्राप्त करने हेतु हमेशा **क्रियाशीलता, प्रयोग और अभ्यास** की आवश्यकता होती है आतः है क्रियाशीलता, प्रयोग और अभ्यास निरंतर जरुरी है।
- बालक करके सीखता है, अतः बार-बार कार्य को करवाना चाहिए।
- कठिन शब्दों एवं ध्वनियों के उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए।
- संस्कृत भाषा में विचार अभिव्यक्ति। संस्कृत को संस्कृत के माध्यम से पढ़ाना।
- संस्कृत अनुच्छेदों का गति, प्रवाह शुद्धता पूर्वक जोर-जोर से पढ़ाना।
- मौन वाचन अभ्यास हेतु पतंजलि के तीन बिंदुओं का अनुकरण करावाना - 1 रुचि 2 निरंतरता 3 वैराग्य
- थार्नडाइक का प्रयत्न एवं त्रुटि का सिद्धांत एवं उसके प्रभाव के तीन नियम इसी सिद्धांत पर आधारित है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- **मौखिककार्यस्य सिद्धांतः**
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

- Sk Katariya
Sky Educare

- भाषा **श्रवण** से प्रारंभ होती है उसके बाद में बालक उसे **बोलना** सीखता है उसके बाद में ही वह उसे **पढ़ता** है और उसके बाद में उसे **लिखता** है, सुनना और बोलना सबसे पहले होता है ***अतः शिक्षण में सबसे पहले मौखिक कार्य करवाना चाहिए बाद में लिखित कार्य का अभ्यास करवाना चाहिए***
- संस्कृत शब्दावली एवं व्याकरण की विभिन्न रूप मौखिक रूप से सीखे जा सकते हैं। लिखित कार्य का आधार मौखिक अभिव्यक्ति है।
- सर्वप्रथम मौखिक तत्पश्चात लिखित कार्य करवाएं। इससे बालक सक्रिय रहता है। तथा ज्ञान चिरस्थाई रहता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- **रुचेः सिद्धांतः**
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

- जिस विषय में बालक की रुचि होती है, वह उस विषय को शीघ्रता से सीख लेता है।
- अतः इस हेतु शिक्षक दृश्य श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करें।
- क्रीड़ा माध्यम से शब्द धातु रूप का ज्ञान कराएं, पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जुड़े।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन जैसे अंताक्षरी,वाद विवाद, भाषण, निबंध लेखन,सस्वर वाचन आदि का आयोजन करें।

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- **अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः**
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

अनुपात का एक उद्देश्य ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक उद्देश्य के उचित अनुपात से है । अर्थात भाषा शिक्षण के समस्त उद्देश्यों को उचित मात्रा में पूरा किया जाए तथा भाषा के समस्त पक्षों की ओर ठीक ध्यान देते हुए प्रत्येक अंग पर अभीष्ट बल दिया जाए।

प्राथमिक स्तर पर मौखिक कार्य, माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक आधारित व्याकरण ज्ञान, उच्च स्तर पर अनुवाद रचना आदि।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- **व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः**
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

प्रत्येक छात्र बौद्धिक एवं शारीरिक रूप से भिन्न होता है जैसे कुछ **कुशाग्र, कुछ सामान्य, कुछ मंदबुद्धि होते हैं ।**

अतः **व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार की भाषा शिक्षण किया जाना चाहिए।** अलग-अलग छात्रों के अनुसार अपने शिक्षण का स्तर रखना।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के लिए कक्षा के स्तर अनुसार विभिन्न सिद्धांतों के सकारात्मक पक्षों का प्रयोग एक साथ करना समवाय सिद्धांत कहलाता है।

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- **उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः**
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

पुस्तक के पाठों को पढ़ाने हेतु पाठो का चयन पर्व, उत्साह, मुख्य दिवस, ऋतु, आदि के आधार पर करना।

जैसे कि स्वतंत्रता दिवस पाठ को 15 अगस्त के आसपास पढ़ाना, होली, दीपोत्सव इत्यादि पाठो को इन त्योहारों के आसपास पढ़ाना आदि।

ऐसा करने से छात्रों को इन विशेष दिवसों का ज्ञान अच्छी प्रकार से प्रत्येक तरीके से हो जाता है।

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- **एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः**
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

शिक्षण के समय सभी प्रकार के बालकों की सहभागिता होनी चाहिए यह कार्य **शिक्षण के साथ-साथ विविध सह शैक्षणिक गतिविधियों** में छात्रों की सहभागिता बढ़ाकर किया जा सकता है। समवेत स्तर में श्लोकों एवं बालगीतों का वाचन, अंताक्षरी वाद-विवाद भाषण निबंध लेखन सस्वर वाचन, संभाषण शिविरों का आयोजन आदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संस्कृत शिक्षण रुचिकर होता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- **बहुमुखी सिद्धांतः**
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

एक उद्देश्य की प्राप्ति करने के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जाने चाहिए अर्थात संबंधित सभी विषयों पर ध्यान देना चाहिए अर्थात बहुविध प्रयत्न करना चाहिए।

- Sk Katariya
Sky Educare

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- **भवनात्मक-अभिव्यक्तेः सिद्धांतः**
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

शिक्षण के समय छात्रों को भावनाओं की अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए जिससे बालक अधिक जुड़ाव के साथ शिक्षण में भाग ले सकें।

- Sk Katariya
Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ताः

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक-अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- **अनुकरणस्य सिद्धांतः**

- बच्चे अनुकरण के द्वारा जल्दी सीखते हैं, बच्चे अपने शिक्षक के जैसे बोलने, शिक्षक के जैसे लिखने और उनके स्वर एवं गीत आदि का अनुकरण करके वैसे ही सीखने का प्रयास करते हैं।
- अतः शिक्षकों को स्वयं अपने उच्चारण स्वर बोलने की गति, लेखन आदि को शुद्ध स्वच्छ रखने का ध्यान रखना चाहिए जिससे छात्र भी उनका अनुकरण करके शुद्ध स्वच्छ और ठीक स्वर एवं गति से पढ़ना लिखना सीख सकें।
- बालक को शिक्षण के समय अधिक से अधिक अनुकरण के अवसर देने चाहिए और उनकी त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए। इसे संशोधन सिद्धांत भी कहते हैं।

- Sk Katariya
Sky Educare

- Sk Katariya
Sky Educare

10

शिक्षण विधि
संस्कृत
शिक्षण-सूत्र

- Sk Katariya
Sky Educare
www.skyeducare.com

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सूत्राणि

- शिक्षण में कठिनाइयों का समाधान करने के लिए मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने अपने अनुभवों व विचारों को सूत्र रूप में प्रस्तुत किया है जिन्हें **शिक्षण के सूत्र** कहा जाता है । जिससे **शिक्षण अधिगम** की प्रक्रिया सुगम, रुचिकर, प्रभावशाली व वैज्ञानिक बन जाती है। ये सूत्र **'बाल प्रकृति'** पर आधारित हैं।
- अतः प्रत्येक अध्यापक को शिक्षण कला में सफलता व दक्षता प्राप्त करने के लिए अपने विषयज्ञान के साथ-साथ शिक्षण सूत्रों का ज्ञान होना भी आवश्यक है ताकि शिक्षण को से सफल बनाया जा सकें।

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सूत्राणि-

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति ।
- सरलात् कठिनं प्रति ।
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति ।
- पूर्णात् अंशं प्रति ।
- अनुभवात् तर्कं प्रति ।
- विशेषात् सामान्यं प्रति ।
- विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति ।
- अनिश्चितात् निश्चितं प्रति ।
- आगमनात् निगमनं प्रति ।

संस्कृतभाषाशिक्षण-सूत्राणि

- **ज्ञातात् अज्ञातं प्रति**
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

इस सूत्र के अनुसार शिक्षक को बालकों के (ज्ञात)**पूर्व ज्ञान को जाँचकर** उसी के आधार पर उन्हें **नया ज्ञान** (अज्ञात)देना चाहिए।

शिक्षक को पढ़ाने से पूर्व छात्रों का पूर्वज्ञान अवश्य जान लेना चाहिए और उसी को आधार बनाकर नवीन ज्ञान की तरफ बढ़ना चाहिए, क्योंकि नवीन तथ्य बच्चे के लिए कठिन होते हैं। किसी पाठ में छात्रों की रुचि व ध्यान तभी संभव है जब उसमें जानकारी व नयापन दोनों सम्मिलित हों।

उदाहरणार्थ- भाषा शिक्षण में वर्णमाला की जानकारी कराते समय प्रत्येक वर्ण से सम्बन्धित वस्तु की जानकारी करायें तत्पश्चात् उसी वर्ण से सम्बन्धित एक से अधिक वस्तुओं की जानकारी कराई जा सकती है। **जैसे- क से कमल, कलम, कलश, कबूतर तथा ख से खरगोश, खत, खड़ाऊं आदि।**

संस्कृतभाषाशिक्षण-सूत्राणि

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- **सरलात् कठिनं प्रति**
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- इस सूत्र का तात्पर्य यह है कि छात्रों को पहले सरल व फिर जटिल बातों की जानकारी दी जाये जिससे पाठ व विषय में उनकी रुचि व ध्यान लगा रहे।
- यह क्रम बाल विकास के अनुकूल व मनोवैज्ञानिक है क्योंकि बच्चा आयु बढ़ने व मानसिक विकास के साथ जटिल बातों को भी समझने लगता है। यदि अध्यापक प्रारम्भ में ही कठिन बातों/तथ्यों को छात्रों को बताने लगें तो वे उसे समझने में असमर्थ रहेंगे। इससे शिक्षक का प्रयास व्यर्थ हो जायेगा।
- उदाहरणार्थ- संधि के बाद समास आदि।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- **स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति**
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- संस्कृत शिक्षण के समय स्थूल पदार्थ दिखाकर क्रमशः उनका नाम, स्वरूप, स्वभाव आदि का वर्णन करना चाहिए ।
- से शिक्षण में दृश्य श्रव्य साधन का प्रयोग करते हुए नियम क्लिष्ट भाव तथा सूक्ष्म भाव स्पष्ट करना उदाहरण से नियम की ओर प्रक्रिया चलती है।

संस्कृतभाषाशिक्षण-सूत्राणि

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- **पूर्णात् अंशं प्रति**
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- बालक के सामने कोई वस्तु आने पर वह सर्वप्रथम पूर्ण वस्तु को ही देखता, जानता व समझता है उसके विभिन्न अंगों/अंशों को नहीं।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- जैसे - संस्कृत शिक्षण में पहले संपूर्ण माहेश्वर-सूत्र सिखा कर बाद में प्रत्येक सूत्र का ज्ञान करवाया जाता है।

- Sk Katariya
Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- **अनुभवात् तर्कं प्रति**
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- अनुभूत ज्ञान वह होता है जिसे बालक देखकर व अनुभव द्वारा प्राप्त करता है। अल्पायु के बालकों में तर्क व विचार के प्रयोग की क्षमता बड़ों की अपेक्षा कम होती है। उनकी जानकारियों का आधार उनका अपना अवलोकन व स्वानुभव होता है परन्तु इन अनुभवों के कारणों को खोजने में बाल मस्तिष्क असफल रहता है।

- अतः शिक्षक को बच्चों के अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान को विविध विधियों/सामग्रियों के प्रयोग द्वारा तर्क संगत व युक्तियुक्त बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

संस्कृतभाषाशिक्षण-सूत्राणि

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- **विशेषात् सामान्यं प्रति**
- विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- एक अच्छा शिक्षक अपने शिक्षण का आरंभ 'आगमन' से करता है 'निगमन' पर समाप्त करता है इस सूत्र के अनुसार पहले उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं तत्पश्चात सामान्य नियमों की स्थापना की जाती है।
- व्याकरण शिक्षण में इसका अधिक महत्व है।
- संस्कृत/हिन्दी में सूक्ति एक विशिष्ट विचार से सम्बन्धित होती है परतु उसकी व्याख्या सामान्य सन्दर्भों में की जाती है।

- Sk Katariya Sky Educare
Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)
- Sk Katariya Sky Educare

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- **विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति**
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- विश्लेषण बालक को किसी बात को भली प्रकार समझने में सहायक होता है तो संश्लेषण उस बात के ज्ञान को निश्चित रूप प्रदान करता है।
- इस सूत्र के अनुसार किसी घटना या तथ्य की जानकारी पहले समग्र रूप में कराकर फिर उसके विविध भागों को व्याख्या व विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए तत्पश्चात उन भागों या खण्डों को आपस में जोड़कर पूरी जानकारी कराकर निष्कर्ष तक पहुंचना चाहिए।
- शिक्षण में विश्लेषण व संश्लेषण दोनों आवश्यक हैं।

संस्कृतभाषाशिक्षण-सूत्राणि

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- **अनिश्चतात् निश्चितं प्रति**
- आगमनात् निगमनं प्रति

- प्रारम्भ में बच्चों को किसी घटना, तथ्य, वस्तु का स्पष्ट व निश्चित ज्ञान नहीं होता है। अनुभव, परिपक्वता के अभाव व कल्पना की अधिकता के कारण वह उनके बारे में अपने मन में कुछ विचार बना लेते हैं जो अस्पष्ट, अनिश्चित व कई बार गलत भी होते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह उनके अनिश्चित ज्ञान को स्पष्ट व निश्चित करे तथा गलत धारणाओं/जानकारियों में भी सुधार करें।
- **उदाहरणार्थ-** किसी प्रदेश की प्रमुख स्थल व वहां की विशिष्टताओं से सम्बन्धित छात्रों के अस्पष्ट व अनिश्चित ज्ञान को शिक्षक वहाँ के मानचित्र, चित्र, मॉडल, चार्ट व उदाहरणों के माध्यम से निश्चित व स्पष्ट कर सकता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण-सूत्राणि

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- **आगमनात् निगमनं प्रति**

- आगमन विधि उदाहरण से नियम की ओर प्रयोग होती है तथा निगमन विधि नियम से उदाहरण के उपयोग होती है।
- आगमन विधि वैज्ञानिक निरीक्षण की विधि है जो अंततः किसी निगमन पर पहुंचती है उसे प्रमाणित करती है।
- विद्यार्थियों द्वारा ही तथ्यों और नियमों की खोज करना इस सूत्र का मूल है।
- व्याकरण शिक्षण हेतु उदाहरण से नियम की ओर जाना अर्थात् आगमन विधि को ही उपयुक्त माना जाता है।
- व्याकरण शिक्षण की प्राचीन विधि नियम से उदाहरण की ओर जाना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं मानी जाती।

- **भाषा** एक ऐसी व्यवस्था जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं, और दूसरों के विचार एवं अभिप्रायों को हम स्वयं समझने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

भाषाकौशलानि

- भाषा के **दो रूप** होते हैं - **1. मौखिक, 2. लिखित।**
- भाषा के **चार कौशल** होते हैं - **सुनना, बोलना, पढ़ना** तथा **लिखना** का।
- अतः भाषा कौशल वह है जिसमें सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने का कौशल सम्मिलित होता है।

भाषाकौशलानि

- श्रवण और वदन/भाषण कौशल ध्वनि विज्ञान से जुड़े हुए हैं।
- पठन एवं लेखन कौशल लिपि विज्ञान से जुड़े हुए हैं

भाषाकौशलानि

Sky Educare

श्रवण	भाषण	पठन	लेखन
1	2	3	4

SE Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

भाषाकौशलानि

✓ भाषा के अधिगम के लिए इन कौशलों को इसी क्रम में याद करना होगा, तभी भाषा का सही विकास संभव हो पायेगा ।

➢ भाषा कौशल के सोपान

1. श्रवण
2. भाषण
3. पठन
4. लेखन

भाषा कौशल के सोपान

LSRW

श्रवण	भाषण	पठन	लेखन
1	2	3	4
L	S	R	W

भाषा कौशल के सोपान

- श्रवण
- भाषण
- पठन
- लेखन

बुद्धि के लिए →

- Input ①
- Output ②

भाषा कौशल के सोपान

उद्देश्य →

श्रवण	भाषण	पठन	लेखन
श्रुत्वार्थग्रहणम्	मौखिकाभिव्यक्तिः	पठित्वार्थग्रहणम्	लिखिताभिव्यक्तिः
सुनकर अर्थ ग्रहण	बोलकर अभिव्यक्ति	पढ़कर अर्थ ग्रहण	लिखकर अभिव्यक्ति

• भाषा कौशल के सोपानो के उद्देश्य

श्रवण | भाषण | पठन | लेखन

- श्रवण → श्रुत्वार्थग्रहणम्
- पठन → पठित्वार्थग्रहणम्

उद्देश्य- ग्रहण

Sky Educare
www.skyeducare.com

• भाषा कौशल के सोपानो के उद्देश्य

श्रवण | भाषण | पठन | लेखन

- भाषण → मौखिकाभिव्यक्तिः
- लेखन → लिखिताभिव्यक्तिः

उद्देश्य- अभिव्यक्ति

- Sk Katariya
SE Sky Educare

भाषा कौशल के सोपान

श्रवण
भाषण
पठन
लेखन

अमूर्त
मूर्त

भाषा कौशल के सोपान

श्रवण
भाषण
पठन
लेखन

विज्ञान →

ध्वनि विज्ञान
लिपि विज्ञान

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)
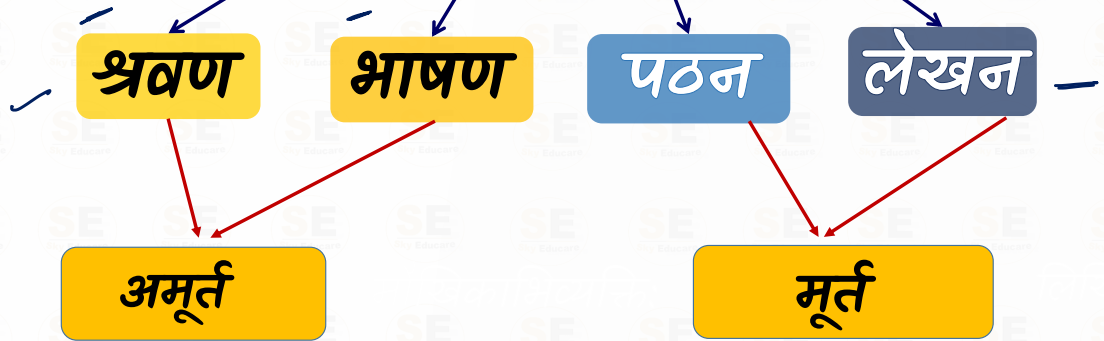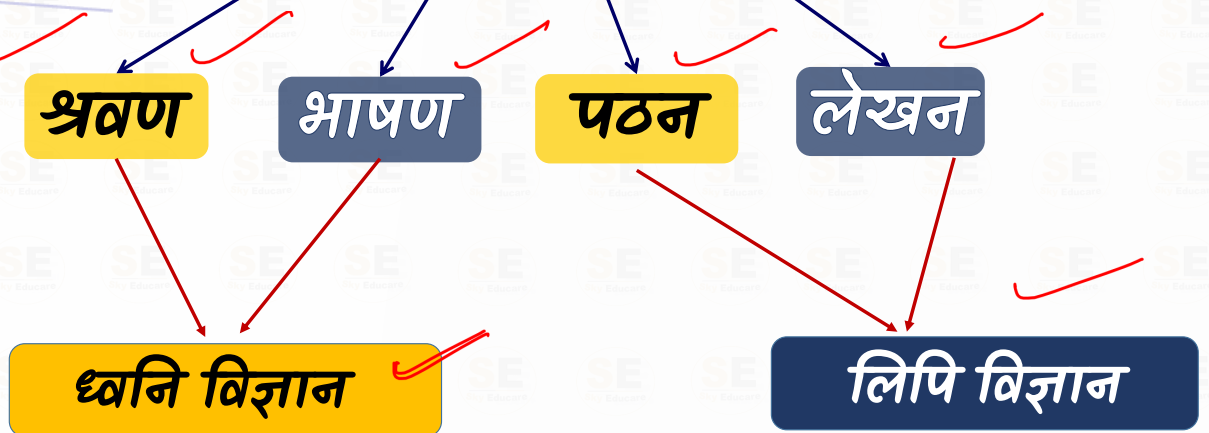
भाषाकौशलानि

- इन चारों कौशलों का सही क्रम में विकास करके हम संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि यह क्रम एक मनोवैज्ञानिक क्रम है।

- अत: संस्कृत छात्रों से अनुरोध है कि वह इन चारों कौशलों का सही क्रम में अभ्यास करें तभी भाषा का सही विकास हो पाएगा।

शिक्षण विधियाँ

12

भाषा कौशल के सोपान

श्रवण → भाषण → पठन → लेखन

श्रवण एवं भाषण

- Sk Katariya

Sky Educare

संस्कृत

श्रवण-कौशल

यह भाषा का पहला कौशल है एवं इसका उद्देश्य सुनकर अर्थ ग्रहण करना है।

उद्देश्य → श्रुत्वार्थग्रहणम्

- भाषा का ग्रहण प्रायः श्रवण के माध्यम से ही होता है लेकिन केवल सुनना मात्र श्रवण कौशल नहीं है बल्कि **ध्यानपूर्वक सुन कर वक्ता के आशय को ग्रहण करना** ही **श्रवण कौशल** है। यह अन्य तीनों कौशलों का मूल आधार है।

श्रवण-कौशल के विकास के तत्व

- वक्ता के मुख से उच्चारित ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनना।
- वक्ता का विषय रुचिकर हो तो श्रवण का विकास होता है।
- वक्ता की संप्रेषण की शैली अगर उचित है तो श्रवण का विकास होता है।
- बालगीत, अभिनयगीत, या आकाशवाणी, दूरदर्शन, आदि सुनने से श्रवण कौशल का विकास संभव है।
- वक्ता की बात को सुनते समय ध्यान वक्ता के वक्तव्य पर ही होना।

श्रवण में बाधाएँ

- वक्ता के मुख से उच्चारित ध्वनियों को **ध्यानपूर्वक न सुनना**।
- विषय रुचिकर **न** हो तो श्रवण का विकास बाधित होता है।
- वक्ता की संप्रेषण की शैली अनुचित होना जैसे - **वक्ता द्वारा तीव्र या अस्पष्ट या तेज आवाज में या धीमी आवाज में बोलना।**
- वक्ता की बात को सुनते समय ध्यान वक्ता के वक्तव्य पर **न** होना।

✓ भाषण-कौशल

भाषण-कौशल

मौखिक रूप से विचाराभिव्यक्ति भाषण कौशल का उद्देश्य है। यह द्वितीय भाषण-कौशल है।

उद्देश्य → मौखिकाभिव्यक्तिः

- अपने आशय को प्रकट करने के लिए शब्दों का संगठित प्रयोग किया जाना ही भाषण कोशल है।
- शब्दों का उच्चारण करना मात्र भाषण कौशल नहीं है बल्कि उन का शुद्ध उच्चारण करना ही भाषण कौशल है।

भाषण-कौशल

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- भाषण कौशल जन्मजात कौशल नहीं होता और न ही वंशानुगत होता है।
- हम जिस वातावरण में रहकर जो भी सुनते हैं और लोगों को बोलते हुए देखते हैं उसी के कारण हमारे भाषण को बल मिलता है।
- शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, उच्चारण में आरोह अवरोह क्रम का ज्ञान, गद्य एवं पद्य का गति के अनुसार भाषण, भावाभिव्यक्ति ठीक, प्रकार से उच्चारण करने का सामर्थ्य उत्पन्न करना, शब्द भंडार में वृद्धि, रुचि पूर्ण प्रस्तुति।

भाषण-कौशल के विकास के तत्व

- निरंतर अभ्यास । गीत, भाषण स्पर्धा, अंताक्षरी, वाद विवाद आदि।
- भाषण कौशल जन्मजात कौशल नहीं होता और न ही वंशानुगत होता है।
- हम जिस वातावरण में रहकर जो भी सुनते हैं और लोगों को बोलते हुए देखते हैं उसी के कारण हमारे भाषण को बल मिलता है।
- अगर बच्चा हिंदी भाषी इलाके में रहता है तो वह हिंदी आसानी से सीख जाता है और यदि इंग्लिश भाषा के वातावरण में रहता है तो वह इंग्लिश आसानी से सीख जाता है।
- भाषा कौशल के विकास के लिए वर्णों के उच्चारण स्थानों का ज्ञान आवश्यक है ।

भाषण-कौशल में बाधाएँ

- वर्णों के उच्चारण स्थानों का ज्ञान न होना भाषण में बाधा बनता है ।
- अशुद्ध बोलना, शब्द भंडारण की कमी, विराम चिन्हों को ध्यान में न रखना, अपर्याप्त स्वर (अधिक तेज बोलना या अधिक धीरे बोलना) गद्य एवं पद्य की गति के अनुसार न बोलना ।

✓ पठन-कौशल

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

13

- Sk Katariya
Sky Educare

पठन-कौशल
(वाचन कौशल)

उद्देश्य → पठित्वार्थग्रहणम्

- **यह भाषा शिक्षण का तृतीय कौशल है।**

- लिखित रूप में विद्यमान अंश को पढ़कर उसके भाव को ग्रहण करना पठन कौशल कहलाता है।
- लिपि संकेत एवं वर्णों का उच्चारण पूर्वक, शब्दों एवं वाक्यों का अर्थ, बोध सहित ग्रहण प्रक्रिया ही पठन/वाचन कौशल कहलाती है। अतः इसका मूल आधार लिपिबद्ध ध्वनिरूप है।
- श्रवण की अपेक्षा पठन से अधिक स्थाई ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- विषय वस्तु को सुनने में जो अशुद्धियां रह जाती हैं उसका पठन से निवारण हो जाता है।

पठन-कौशल
(वाचन कौशल)

उद्देश्य → पठित्वार्थग्रहणम्

- पठन प्रक्रिया दो कारकों से प्रभावित होती है - मुद्रा एवं शैली।
- पठन **शैली** से तात्पर्य है कि लिखित सामग्री को सही लय, गति, प्रवाह, विराम एवं उच्चारण के साथ पढ़ना।
- पठन **मुद्रा** : इसमें बच्चों को सिखाया जाता है कि किस प्रकार सही मुद्रा में खड़े होकर या बैठकर पुस्तक को आँखों से उचित दूरी पर रखकर कैसे पकड़ा जाए ओर उसका पठन किया जाए, एवं भावानुकूल पठन होना अत्यावश्यक है।

पठन-कौशल उद्देश्य

- गति लय पूर्वक उच्चारण सामर्थ्य संपादन (प्राथमिक स्तर हेतु)।
- समान गति से पठन का सामर्थ्य।
- भावों के अनुकूल तथा अभिनय पूर्वक पठन करना (माध्यमिक स्तर हेतु)।
- सृजनात्मक शक्ति का विकास व स्वशैली का विकास तथा आनंदानुभूति (उच्च स्तर हेतु)
- पढ़कर उसके भाव को ग्रहण करना

पठन के प्रकार

➢ पाठकों की संख्या के आधार पर

1. **व्यक्तिगत पठन**
   (एक समय में छात्र द्वारा)
2. **सामूहिक पठन**
   (एक समय में सभी छात्रों द्वारा पठन)

➢ अभिव्यक्ति के आधार पर

➢ सस्वर पठन
(स्वर के साथ पठन)

1. **आदर्श वाचन** (शिक्षक के द्वारा)
2. **अनुकरण वाचन** (छात्रों के द्वारा)
3. **समवेत वाचन** (समूह में छात्रों के द्वारा)

➢ मौन पठन
(मौन रहकर पठन)

1. सामान्य मौन पठन
2. गंभीर मौन पठन
3. द्रुत पठन

➢ अभिव्यक्ति के आधार पर

➢ सस्वर पठन - उद्देश्य →

1. आदर्श वाचन (शिक्षक के द्वारा)
2. अनुकरण वाचन (छात्रों के द्वारा)
3. समवेत वाचन (समूह में छात्रों के द्वारा)

शुद्धोच्चारण की योग्यता का विकास।
लय-गति-यति- जैसे - विराम चिन्हों का ध्यान रखते हुए सस्वर पठन करने की योग्यता का विकास।

➢ अभिव्यक्ति के आधार पर

➢ मौन पठन

1. सामान्य मौन पठन
2. गंभीर मौन पठन
3. द्रुत पठन

उद्देश्य

स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास
पठन में मुख्यभावों को आत्मसात करने की योग्यता का विकास करना।
बालकों में चिंतन-मनन शक्ति का विकास करना।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

सस्वर पठन

1. आदर्श वाचन (शिक्षक के द्वारा)
2. अनुकरण वाचन (छात्रों के द्वारा)
3. समवेत वाचन (समूह में छात्रों के द्वारा)

मौन पठन

1. सामान्य मौन पठन
2. गंभीर मौन पठन
3. द्रुत पठन

आदर्श वाचन (शिक्षक द्वारा)

- पाठ पढ़ते समय जब शिक्षक स्वयं बोल- बोलकर पढ़ाता है तो उसे आदर्श वाचन कहते हैं।
- शिक्षक पदों का स्पष्ट उच्चारण करता है, ताकि छात्र उसका अनुकरण कर सकें।
- सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो। ह्रस्व दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
- कक्षा में शांति रखनी आवश्यक।
- उच्चारण स्थानों के अनुसार आदर्श वाचन करना आवश्यक।
- पाठगत विराम चिन्ह व अन्य चीजों को ध्यान में रखकर पठन में सावधानी रखे।
- भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए भावानुकूल पाठ आदर्श वाचन का अत्यावश्यक तत्व है।

अनुकरण वाचन

(छात्रों के द्वारा)

- छात्र शिक्षक के द्वारा किए गए आदर्श वाचन का अनुकरण करते हैं।
- सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो। ह्रस्व दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
- कक्षा में शांति रखनी आवश्यक।
- भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए।

समवेत वाचन

(समूह में छात्रों के द्वारा)

- सभी छात्रों सें शिक्षक कभी मौन , कभी उच्चस्वर मे भावों के अधिगम के लिए समवेत वाचन करवाता है।
- सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो। ह्रस्व दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
- कक्षा में शांति रखनी आवश्यक।
- भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए।
- प्रारंभिक कक्षाओं के लिए श्रेष्ठ।

1. सामान्य मौन पठन

मौन पठन

Sky Educare

- मौन रहकर पठन सामान्य उद्देश्य हेतु पठन करना, जैसे - कथा पठन, समाचार पत्र आदि का पठन।

गंभीर मौन पठन

मौन पठन

Sky Educare

- पाठ्य सामग्री की तह तक पहुंचने व गंभीरतापूर्वक चिंतन मनन करने के लिए मौन पठन किया जाता है।
- सारगर्भित क्लिष्ट वह अधिक चिंतन वाली विषय वस्तु का मौन रहकर पठन किया जाना भी इस में सामिल है।

मौन पठन

- सीखी हुई बात का अभ्यास करने और अवकाश का सदुपयोग करने के लिए द्रुत पठन किया जाता है।
- सूचना एकत्रित करने एवं आनंद प्राप्त करने के लिए भी द्रुत मौन पठन किया जाता है।

पठन कौशल अभिवृद्धि की विधि:

- **वर्ण विधि:** - ***अक्षर बोध विधि/वर्ण बोध विधि-*** वर्णमाला के एक एक वर्ण का ज्ञान
  सरल कठिन प्रति/ सूक्ष्मात्-स्थूलं प्रति का अनुसरण करते हुए।
- **पद विधि:** - वर्ण के ज्ञान के धीरे धीरे दीर्घतर **पद** ज्ञान
- **वाक्य विधि:** - पदों के ज्ञान ज्ञान के बाद वाक्यों का ज्ञान, वाक्यों के आधार पर पठन ।
- **कथा विधि:** - वाक्य शिक्षण का दूसरा रूप जिसमें अनेक चित्रों के सहयोग से कथा बालकों को सुनाई जाती है चित्रों के नीचे कहानी से संबंधित बड़े बड़े अक्षरों में वाक्य लिखे जाते हैं।

अधम पाठक के 6 लक्षण पाणिनि शिक्षा में बताए गए हैं –

गद्य को गीत रूप में पढ़ना, अत्यंत तीव्रता से पढ़ना, पढ़ते समय सिर को हिलाना, विचारे बिना जैसा लिखा हुआ है वैसा पढ़ना, अर्थ को बिना जाने ही बोलना, अल्प कंठ से धीरे-धीरे पढ़ना।

श्रेष्ठ पाठक के पाणिनीय शिक्षा में 6 गुण बताए गए हैं -

श्रेष्ठ पाटक में मधुरता, अक्षरों की स्पष्ट अभिव्यक्ति, पदों का विच्छेद, अच्छा स्वर,धीरता तथा लय यह गुण होते हैं।

माधुर्यमक्षरव्यक्ति:, पदच्छेदस्तु सुस्वर:
धैर्यं लयसमर्थश्च षडेते पाठकागुणा।

✓ लेखन-कौशल

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

14

- Sk Katariya

Sky Educare

उद्देश्य → लिखिताभिव्यक्तिः

- **यह भाषा शिक्षण का चतुर्थ (अंतिम) कौशल है।**

- ध्वनि रूप में विद्यमान भाषा अंश का लिपि रूप में लिखा जाना ही लेखन है।
- भाषा के स्वरूप को स्थायित्व प्रदान किया जाता है।
- यहां वर्तनी का महत्व है।

लेखन-कौशल उद्देश्य

- अक्षर शब्द वाक्य के स्वरूप का ज्ञान
- भावों को लिपिबद्ध कर के स्थायित्व प्रदान करना
- पढ़े हुए विषय को लिखित रुप में अभिव्यक्त करना

लेखन कौशल अभिवृद्धि की विधि:

- दृष्ट लेखन विधि (जेकाटॉट विधि) (प्राथमिक स्तर के लिए)
- श्रुतलेखन विधि (माध्यमिक स्तर के लिए)
- अक्षर स्वरूप अनुकरण पद्धति

दृष्ट लेखन विधि (जेकाटॉट विधि) :

अध्यापक के द्वारा लिखे गए शब्दों का अनुकरण करके छात्र लिखता है या पुस्तक या श्यामपट्ट में देखकर छात्र अभ्यास करता है।

- अशुद्धियां कम होती है।
- विराम चिन्ह आदि का ज्ञान भी हो जाता है।

(प्राथमिक स्तर के लिए श्रेष्ठ)

Sky Educare

श्रुतलेखन विधि :

- अध्यापक के पदों या वाक्यों को सुनकर लिखना।
- अध्यापक मध्यम गति से वाचन करें।
- वाक्य/पद पाठ्य पुस्तक से ही हो।
- विराम चिन्हों को न बोले बल्कि छात्र उन्हें समझने का प्रयत्न करें।
- छात्र स्वयं भावानुकूल विराम चिन्ह आदि का प्रयोग करें।

(उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के लिए श्रेष्ठ)।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

अक्षर स्वरूप अनुकरण पद्धति:

अध्यापक अधिकाधिक श्यामपट का प्रयोग करें, गृह कार्य के अतिरिक्त अन्य विषयों पर लिखने का अभ्यास छात्रों से करवाया जाए

- Sk Katariya
Sky Educare

✓ व्याकरणशिक्षणविधय:

15

व्याकरण शिक्षण

उद्देश्यम् – भाषाज्ञानम्

Sky Educare www.skyeducare.com

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- **व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य- भाषा ज्ञान**

✓ संस्कृत भाषा को शुद्ध रूप में जानने के लिए व्याकरण शास्त्र का अधययन किया जाता है।

✓ छात्रों को शुद्ध भाषा के प्रयोग सीखना।

✓ व्याकरण के द्वारा छात्रों में रचना तथा सर्जनात्मकता।

✓ छात्रों को ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर शब्द योजना, शब्द शक्तियों एवं शुद्ध वर्तनी का ज्ञान कराना।

✓ छात्रों को वाक्य रचना के नियम, विराम चिन्हों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

Sky Educare www.skyeducare.com

व्याकरण शिक्षण विधियाँ

➤ प्राचीन विधि

- ✓ सूत्र विधि
- ✓ परायण विधि
- ✓ व्याकरणानुवादविधि(भंडारकर विधि)
- ✓ अव्याकृत विधि/भाषा संसर्ग विधि
- ✓ आगमन विधि
- ✓ निगमन विधि
- ✓ व्याख्या विधि

➤ आधुनिक विधि

- ✓ आगमन निगमन विधि
- ✓ पाठ्यपुस्तक विधि
- ✓ अनौपचारिक विधि
- ✓ समवाय विधि
- ✓ संरचनाविधि

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

प्राचीन विधि

सूत्र विधि

✓ परंपरागत विधि । पांडित्य विधि

✓ इसके द्वारा नियमों को सूत्ररूप में कंठस्थीकरण किया जाता था।

✓ सामान्य से विशिष्ट की ओर (सामन्याद् विशेषं प्रति) ।

✓ जटिल विषयों को समझने में याद रखने में सुविधा होती थी।

✓ उद्देश्य **"गागर में सागर"** (घटे समुद्रपूरणम्)भरना था।

Sky Educare

प्राचीन विधि

परायण विधि

✓ **पाणिनि के समय प्रचलित ।**

✓ **परायण करने वाला (पारायणिक) ।**

✓ **परायण में नियमों को रटना तथा उनकी बार-बार आवृत्ति करना ।**

✓ **परायण के बीच में, अन्य विषयक वार्ता नहीं हो सकती थी।**

Sky Educare

प्राचीन विधि

व्याकरण अनुवाद विधि- (भंडारकर विधि)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- प्रवर्तक श्री रामकृष्ण गोपाल भंडारकर थे
- इस विधि के द्वारा सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण पाठ की उदाहरण सहित व्याख्या की जाती है, उस व्याकरण नियम का पर्याप्त अभ्यास कराया जाता है
- संस्कृत से अंग्रेजी में अंग्रेजी से संस्कृत अनुवाद पर बल दिया जाता है
- अभ्यास के लिए नवीन शब्द बताया जाते हैं
- **भंडारकर की पुस्तकें –**

मार्गोपदेशिका , संस्कृतमन्दिरांत: प्रवेशिका ।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

Sky Educare

प्राचीन विधि

अव्याकृत विधि

✓ अव्याकृत विधि /भाषा संसर्ग विधि

✓ भाषा के साथ-साथ व्याकरण का भी ज्ञान दिया जाता है ।

✓ इस विधि में अभ्यास पर बल दिया जाता है ।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

प्राचीन विधि

आगमन विधि

- ✓ उदाहरण से नियम की ओर (उदाहरणाद् नियमं प्रति)
- ✓ ज्ञात से अज्ञात की ओर (ज्ञाताद् अज्ञातं प्रति)
- ✓ विशिष्ट से सामान्य की ओर (विशिष्टात् सामान्यं प्रति)
- ✓ प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर (प्रत्यक्षात् प्रमाणं प्रति)
- ✓ स्थूल से सूक्ष्म की ओर (स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति)
- ✓ मूर्त से अमूर्त की ओर (मूर्ताद् अमूर्तं प्रति)

शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाता हैं।

यह विधि सरल एवं स्वाभाविक है बार-बार प्रयोग के कारण कंठस्थीकरण आवश्यकता नहीं होती यह विधि आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के अनुकूल है अतः इसे व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि कहा जाता है इस विधि से छात्रों में उत्साह जागृत होता है तथा वह सक्रिय होते हैं।

Sky Educare

प्राचीन विधि

निगमन विधि :

- ✓ इस विधि में शिक्षक पहले सामान्य नियमों व सिद्धांतों को बताता है फिर उदाहरण देता है
- ✓ इस विधि में समय और परिश्रम कम लगता है(उच्च कक्षाओं के लिए यह श्रेष्ठ विधि है)

प्राचीन विधि

निगमन विधि :

✓ निगमन विधि के चार सोपान हैं –

✓ १. नियम बोधन २.नियम स्पष्टीकरण ३.नियम परीक्षण एवं ४.सत्यापन

Sky Educare

प्राचीन विधि

निगमन विधि :

➢ निगमन विधि के शिक्षण सूत्र :

➢ नियम से उदाहरण की ओर
➢ सामान्य से विशिष्ट की ओर
➢ प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर
➢ सूक्ष्म से स्थूल की ओर
➢ अमूर्त से मूर्त की ओर
➢ अज्ञात से ज्ञात की ओर

प्राचीन विधि

व्याख्या विधि

- ✓ पतंजलि ने इसी विधि का अनुकरण किया है
- ✓ व्याख्यान के 6 अंग

पदच्छेदः पदार्थोक्तिः विग्रहो वाक्ययोजना।
आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम् ॥

- ✓ इसमें भाषा की प्रायोगिक पक्ष की बजाय व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।
- ✓ यह विधि आधुनिक निगमनात्मक विधि के समकक्ष है।

➤ आधुनिक विधि

आगमन निगमन विधि

(श्रेष्ठ विधि)

- ➤ दो विधियों "आगमन एवं निगमन का मिश्रण"
- ➤ उदाहरण से नियम तथा नियम से उदाहरण की ओर
- ➤ ज्ञान स्थाई व रोचक होगा
- ➤ व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि

अनौपचारिक विधि

- व्याकरण का कोई औपचारिक अध्यापन नहीं ।
- संभाषण में ही व्याकरण का ज्ञान होता है ।
- संस्कृत संभाषण शिविर में अनौपचारिक विधि से ही व्याकरण का ज्ञान होता है ।

Sky Educare

पाठ्यपुस्तकविधि

- समर्थक : डॉ. वेस्ट महोदय । प्रचलन : अंग्रेजों के आगमन के साथ ही हुआ था ।
- इसमें कक्षा के स्तरानुसार विषय वस्तु को वर्गीकृत किया जाता है।
- भाषा शिक्षण की लोकप्रिय विधि पाठ्यपुस्तक विधि है।
- व्याकरण का ज्ञान प्रसंग आने पर ही दिया जायेगा।
- परीक्षा व अभ्यास कार्य का आधार पाठ्यपुस्तक ही है। शिक्षण का केंद्र पाठ्यपुस्तक को माना गया है।
- इन पाठ्य पुस्तकों का उद्देश्य कि इन्हें पढ़कर छात्र शिक्षक की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

समवाय विधि

- यहां पर भी व्याकरण का नियमित अध्ययन नहीं होता
- प्रसंग आने पर उस विषय में व्याकरण संबंधी ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है
- शिक्षक पाठ के दौरान ही व्याकरण के नियमों को यथास्थान बताता रहता है ।

संरचनाविधि

- वाक्यस्वरूप या वाक्य की सरंचना पर बल देकर शिक्षण करवाया जाता है।
- वाक्य रचना के दौरान व्याकरणात्मक ज्ञान दिया जाता है साथ ही शब्दकोष का ज्ञान भी करवाया जाता है ।
- जैसे- कर्ता, कर्म, अव्यय, उपसर्ग, निपात आदि का ज्ञान करवाना।
- इस विधि का प्रयोग प्रत्यक्ष विधि को सफल बनाने के लिए होता है।

व्याकरण पाठ योजना

1. प्रस्तावना
2. उद्देश्य कथन
3. प्रस्तुतिकरण
4. सामान्यीकारण
5. नियमीकरण
6. पुनरावृति
7. गृह कार्य

गद्य शिक्षण

मनुष्य की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति का रूप गद्य है। लेकिन साधारण व्यवहार की भाषा गद्य तभी कही जा सकती है जब वह व्यवस्थित और स्पष्ट हो।

उद्देश्यम् – ग्रहणम् अभिव्यक्तिश्च

उद्देश्य -

- शुद्ध पदों का ज्ञान व उच्चारण ।
- नए नए शब्दों के प्रति आकर्षित करके छात्रों में अभिरुचि पैदा करना ।
- शब्द भंडारण व शक्तियों का ज्ञान प्रदान करना।
- भावाभिव्यक्ति तथा कल्पना शक्ति का वर्णन करना।
- विवेचनात्मक तथा समीक्षात्मक शक्ति का विकास।

गद्य शिक्षण की विधियाँ -

- ***विशेष*** *- गद्य शिक्षण की विधियाँ वस्तुतः काठिन्य निवारण की विधियाँ है अर्थात - गद्य शिक्षण की स्वतंत्र विधियां नहीं होती हैं। यहाँ शिक्षण के समय काठिन्य निवारण में जो विधियां काम में ली जाती हैं उन्हें ही गद्य शिक्षण की विधियां कहा जाता है।*
- ***अतः*** *गद्य शिक्षण की सर्वश्रेष्ठ विधि "काठिन्य निवारण विधि" है जिसे गद्य शिक्षण की आत्मा कहा जाता है।*

१. उद्बोधनविधि / अर्थबोधविधि
२. प्रवचनविधि / कथनविधि
३. स्पष्टीकरण विधि
४. प्रश्नोत्तर विधि/संवाद विधि/सुकराती विधि
५ व्याख्या विधि

१. उद्बोधनविधि / अर्थबोधविधि

✓ *छात्रों के माध्यम से अर्थ निकलवाना उद्बोधन है।*

✓ *कठिन शब्दार्थ शिक्षक स्वयं नहीं बातकर विभिन्न दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करते हुए छात्रों को उदबोधन देकर अर्थ निकलवाने के लिए छात्रों से प्रयत्न करवाता है।*

❖ *इस विधि में अध्यापक कठिन शब्दों के अर्थों को बताने के लिए अनेक साधनों का सहारा लेता है -*

अ. चित्र-रेखाचित्र - मानचित्र आदि दिखा कर –
(महापुरुष, गणितीय आकृतियां, देश प्रदेशों के नाम)

ब. प्रतिकृति (मॉडल) दिखा कर-
(ज्वालामुखी, आपदा प्रबंधन, यातायात व्यवस्था)

स . प्रत्यक्ष अभिनय करके -
(हंसकर गाकर दौड़कर पढ़कर आदि क्रियाएं करके)

द .पदार्थ को प्रत्यक्ष दिखाकर -
(पुष्प, फल, पुस्तक, फर्नीचर आदि को दिखाकर)

२. प्रवचनविधि / कथनविधि

✓ *इस विधि में अध्यापक विभिन्न प्रविधियों के द्वारा काठिन्य निवारण करता है -*

१.अनुवाद विधि (प्राथमिक स्तर हेतु)

✓ *अध्यापक द्वारा संस्कृत के पदों का सरल मातृभाषा में अनुवाद करना।*

२.कोष विधि (उच्च स्तर हेतु)

✓ *पर्याय शब्दों द्वारा शब्दकोश का ज्ञान कराना।*

३. टीकाविधि

✓ *अध्यापक प्राचीन टिका तथा भाषाओं का प्रयोग करता है।*

✓ *प्राचीनतम विधि है।*

४. परिभाषा विधि

✓ *पारिभाषिक शब्दों को उदाहरण देकर समझाना।*

३. स्पष्टीकरण विधि

✓ इस विधि में अध्यापक विभिन्न प्रविधियों के द्वारा पाठ में आए पदों को **स्पष्ट** करता है-

१. व्युत्पत्ति के द्वारा

✓ संधि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग, संज्ञा पद, क्रियापद आदि की अलग-अलग व्युत्पत्ति कर के अर्थ को स्पष्ट किया जाता है। (उच्च स्तर हेतु)

२. वाक्य प्रयोग के द्वारा

✓ पाठ में आए कठिन पदों को किसी दूसरे सरल वाक्य प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट किया जाता है ।

३. तुलना के द्वारा

✓ यह समानार्थक विलोम शब्द आदि के द्वारा तुलना की जाती है।

४. उदाहरण

✓ उदाहरण के माध्यम से भी काठिन्यनिवारण किया जाता है।

४ प्रश्नोत्तर विधि/संवाद विधि/सुकराती विधि

Sky Educare

✓ इसके प्रवर्तक सुकरात माने जाते हैं अतः इसे सुकराती विधि भी कहा जाता है ।

✓ शिक्षक विविध प्रश्नों के माध्यम से छात्रों से उत्तर प्राप्त करके पाठ के प्रवाह को आगे बढ़ाता है ।

5. व्याख्या विधि

✓ नए शब्द या वाक्यों की व्याख्या अध्यापक के द्वारा की जाती है।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

गद्य पाठ योजना

Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

1. पूर्व ज्ञान परीक्षण
2. प्रस्तावना
3. उद्देश्य कथन
4. प्रस्तुतिकरण
5. आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन
6. अशुद्धि संशोधन काठिन्य निवारण
7. बोद्ध प्रश्न
8. मौन वाचन
9. विचार विश्लेषणात्मक
10. सार कथन
11. पुनरावृति प्रश्न
12. गृह कार्य

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

SE Sky Educare

पद्य शिक्षण

काव्यशिक्षण / कविताशिक्षण

Sky Educare

पद्य क्या है : काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की शृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है ।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार- "रसात्मकं वाक्यं काव्यं" अर्थात रसयुक्त वाक्य ही काव्य है । "

काव्यशिक्षण / कविताशिक्षण

Sky Educare

उद्देश्यम् – रसानुभूतिः

- गतिलयपूर्वक काव्यपाठ द्वारा आनंद प्रदान करना तथा रुचि का विकास करना।
- काव्यगत भावों के द्वारा रसानुभूति प्राप्त करना ।
- कल्पनाशक्ति व तर्क शक्ति का विकास करना ।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

पद्यशिक्षणविधय:

- गीत विधि
- दण्डान्वय विधि
- खण्डान्वय विधि
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- टिकाविधि
- समीक्षा विधि

गीत, कविता, श्लोकादि को पढ़ाने की प्रणाली गीत प्रणाली है। कक्षा में बालकों द्वारा समवेत स्वर वाचन भी करवाया जाता है (प्राथमिक स्तर हेतु)

पद्यशिक्षणविधय:

Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- गीत विधि
- **दण्डान्वय विधि**
- खण्डान्वय विधि
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- टिकाविधि
- समीक्षा विधि

यहां दंड वाक्य का प्रतीक है ।

संपूर्ण श्लोक का पूर्ण वाक्य में परिवर्तन करना दण्डान्वय विधि कहलाती है

इस विधि में श्लोक का अन्वय किया जाता है ।

इस में छात्र स्वयं या अध्यापक की सहायता से कविता में प्रधान वाक्य को खोजता है, फिर उसमें **व्याकरण संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं ।**

यहां श्लोक में से कर्ता, क्रिया, अन्य कारक, अव्यय पद, विशेषण, विशेष्य आदि को अलग-अलग करने हेतु प्रश्न किए जाते हैं और इन के माध्यम से श्लोक का अन्वय करने का प्रयास किया जाता है ।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

SE Sky Educare

पद्यशिक्षणविधय:

Sky Educare

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- गीत विधि
- दण्डान्वय विधि
- **खण्डान्वय विधि**
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- टिकाविधि
- समीक्षा विधि

यह पद्य शिक्षण की **सर्वश्रेष्ठ विधि** है (प्तेक स्तर हेतु उपयुक्त है)

श्लोक का खण्डान्वय (खंड करके अन्वय) करके भावविचार संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं व्याकरण के स्थान पर श्लोक के विषय पर आधारित प्रश्न होते हैं।

श्लोक का अन्वय करने के लिए सर्वप्रथम श्लोक में से प्रधान वाक्य को खोजा जाता है

इस विधि में छात्र सक्रिय रहते हैं उनकी श्लोक पाठ में रुचि रहती है ।

छात्रों को रसानुभूति तथा सौंदर्य अनुभूति होती है ।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

SE Sky Educare

पद्यशिक्षणविधय:

- गीत विधि
- दण्डान्वय विधि
- खण्डान्वय विधि
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- टिकाविधि
- समीक्षा विधि

- *अध्यापक द्वारा श्लोक को पढ़कर अर्थ बताकर कठिन शब्दों का मातृभाषा में अनुवाद कर दिया जाता है।*
- *इस से छात्र रट कर लिखने में समर्थ हो जाते हैं लेकिन उन्हें रसानुभूति नहीं होती। अत: यह विधि पद्य शिक्षण के लिए मनोवैज्ञानि विधि नहीं है क्योंकि यहाँ रसानुभूति नहीं होती।*

Sky Educare

पद्यशिक्षणविधय:

- गीत विधि
- दण्डान्वय विधि
- खण्डान्वय विधि
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- टिकाविधि
- समीक्षा विधि

अध्यापक श्लोक के एक-एक पद की व्याख्या करते हुए श्लोक का अर्थ बताता है। सौंदर्य तत्वों के बोध पर जोर दिया जाता है। (उच्चतर हेतु उपयुक्त)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

पद्यशिक्षणविधय:

➢ गीत विधि
➢ दण्डान्वय विधि
➢ खण्डान्वय विधि
➢ भाषा अनुवाद विधि
➢ व्याख्या विधि
➢ भाष्य विधि
➢ तुलना विधि
➢ टिकाविधि
➢ समीक्षा विधि

इसमें ऐतिहासिक उदाहरणों की प्रधानता होती है। तुलना व समीक्षा विधि का एकीकृत रूप है। शिक्षक कथावाचक की तरह अनेक कथा और प्रसंगों को बताते हुए श्लोक के अर्थ को स्पष्ट करता है (उच्च स्तर हेतु उपयुक्त)

Sky Educare

पद्यशिक्षणविधय:

➢ गीत विधि
➢ दण्डान्वय विधि
➢ खण्डान्वय विधि
➢ भाषा अनुवाद विधि
➢ व्याख्या विधि
➢ भाष्य विधि
➢ तुलना विधि
➢ टिकाविधि
➢ समीक्षा विधि

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

इस विधि में शिक्षक प्रस्तुत श्लोक के समान अर्थ वाला अन्य श्लोक बताते हुए तुलना करते हुए भावों को स्पष्ट करता है, इसमें शिक्षक को साहित्यज्ञ और भाषाविद् होना आवश्यक है ।
इस विधि में काव्य सौंदर्य की अनुभूति प्राप्त होती है।

पद्यशिक्षणविधय:

- गीत विधि
- दण्डान्वय विधि
- खण्डान्वय विधि
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- **टिकाविधि**
- समीक्षा विधि

इस विधि में शिक्षक विभिन्न टिकाओं की सहायता से व्याकरणात्मक एवं भावात्मक ज्ञान करवाता है।

(उच्च स्तर हेतु उपयुक्त)

Sky Educare

पद्यशिक्षणविधय:

- गीत विधि
- दण्डान्वय विधि
- खण्डान्वय विधि
- भाषा अनुवाद विधि
- व्याख्या विधि
- भाष्य विधि
- तुलना विधि
- टिकाविधि
- **समीक्षा विधि**

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

शिक्षक कवि के जीवन दर्शन से छात्रों को अवगत कराता है।

अन्य कवियों के साथ तुलना करके गुण दोषों को बताकर समीक्षा की जाती है।

पद्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए काव्य सौंदर्य के तत्व का बोध व रस अनुभूति का प्रयास करता है।

पद्य पाठ योजना :

- प्रस्तावना
- उद्देश्य कथन
- प्रस्तुतिकरण
- आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन
- अशुद्धि संशोधन काठिन्य निवारण
- भाव विशलेषण प्रश्न
- सौंदर्यानुभूति प्रश्न
- सार कथन
- सस्वर वाचन
- पुनरावृति प्रश्न /मुल्यांकन
- गृह कार्य

नाटक शिक्षण विधयः

उद्देश्यम् – संस्कारशिक्षणम्

नाटक शिक्षण
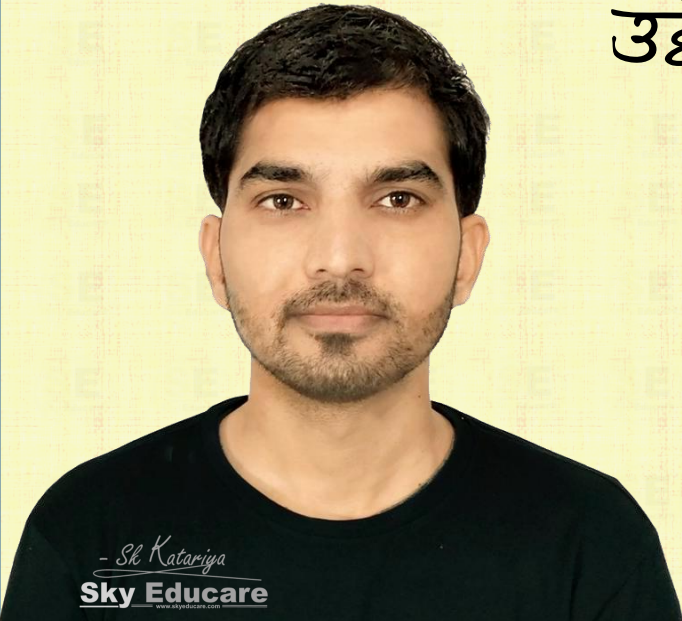
नाटक :

दृश्य श्रव्य काव्य को नाटक कहते हैं, नाटक, काव्य का एक रूप है, जो श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति के साथ साथ संस्कृति तथा संस्कारों का भी ज्ञान कराता है। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है ।

नाटक शिक्षण

उद्देश्यम् – संस्कार शिक्षणम्

- नाटक में पात्रों द्वारा संस्कृति शिक्षण तथा संस्कार शिक्षण करवाना ।
- अवरोह - आरोह पूर्वक वार्तालाप तथा अभिनय की क्षमता प्रदान करना ।
- छात्रों में निरीक्षण कल्पना, चिंतन एवं विवेचन की योग्यता का विकास।
- मनोरंजन करना ।

नाटक शिक्षण

- भरतमुनि के अनुसार नाटक शिक्षण के तीन उद्देश्य हैं -
  - **हितोपदेशजननम्-** समाज को कल्याणकारी उपदेश देना ।
  - **विश्रांतिजननम्-** समाज को शांति प्रदान करना और
  - **विनोदजननम्-** सभी का मनोरंजन करना ।

नाटक शिक्षण की विधियाँ

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

नाटकशिक्षणविधय:

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

इस विधि में नाटक में आए सारे पात्रों का अभिनय स्वयं शिक्षक ही करता है।

पात्रों के अनुकूल व भावानुसार आरोह-अवरोह के साथ संवाद बोलकर अभिनय करता है।

अमनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि नाटक शिक्षण के उद्देश्य पुरे नहीं हो पाते।

इस विधि में छात्र मूक दृष्टा की तरह रहते हैं।

व्याकरणात्मक तत्वों का ज्ञान भी नहीं हो पाता।

नाटकशिक्षणविधय:

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

Sky Educare

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

- इस विधि में अध्यापक नाटक के कथावस्तु ,चरित्र, गुण-शैली आदि की व्याख्या करता है।
- यह विधि गद्य शिक्षण की भांति हो जाती है उच्च स्तर हेतु उपयोगी है
- यह मनोवैज्ञानिक विधि नहीं है क्योंकि छात्र निष्क्रिय रहते हैं।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

नाटकशिक्षणविधय:

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

- इस विधि में छात्रों द्वारा पूरे नाटक का अभिनय रंग मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।
- यह विधि नाटक शिक्षण के लिए पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है।
- इससे छात्रों में संस्कार शिक्षण होता है जो कि नाटक का मुख्य उद्देश्य है।
- नाटक शिक्षण की सर्वोत्तम विधि हो पाती लेकिन धन समय की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।
- सभी विद्यालयों में एवं संस्थाओं में इसके लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती है।

नाटकशिक्षणविधय:

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

शिक्षक के द्वारा छात्रों को नाटक के पात्रों की भूमिका का वितरण करके अभिनय करवाया जाता है।

छात्र अभिनय करते हैं शिक्षक निदेशक होता है।

मनोवैज्ञानिक विधि है।

नाटकशिक्षणविधय:

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

उक्त सभी विधियों का मिश्रण करके अध्यापक द्वारा नाटक शिक्षण करवाना समवाय विधि है इसे नाटक शिक्षण की **श्रेष्ठ विधि** कहा जा सकता है।

Sky Educare

नाटक पाठ योजना :

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

1. प्रस्तावना
2. उद्देश्य कथन
3. वाचन
   - I. आदर्श वाचन,
   - II. अनुकरण वाचन
4. बोध प्रश्न
5. काठिन्यनिवारण
6. विषयवस्तु संबंधी प्रश्न
7. अभिनय (प्रमुख सोपान)
   - I. आदर्शअभिनय (अध्यापक द्वारा)
   - II. भूमिका वितरण (छात्रों को रुचि अनुसार का वितरण)
   - III. अनुकरण अभिनय
   - IV. (छात्रों के द्वारा)
8. मूल्यांकन
9. गृह कार्य

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

संस्कृत

अनुवाद शिक्षण विधयः

उद्देश्यम् - द्विभाषाज्ञानम्
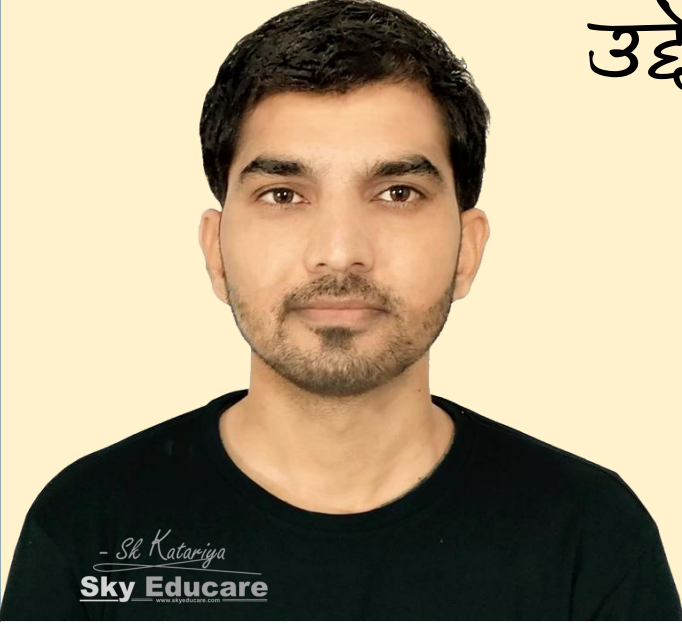
19

अनुवाद -

किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद (Translation) कहलाता है।

अनुवाद शिक्षण

Sky Educare

उद्देश्यम् – द्विभाषाज्ञानम्

- दो भाषाओँ का बोध व व्याकरण का ज्ञान
- अनुवाद मातृभाषा से संस्कृत भाषा में हो सकता है, संस्कृत भाषा से मातृभाषा में हो सकता है या अन्य किसी भाषा में भी हो सकता है

अनुवाद शिक्षण

- **अनुवाद मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है -**

    - **शब्दानुवाद**
    - **छायानुवाद या भावानुवाद**
    - **तथ्यानुवाद**

अनुवाद प्रकार

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- ➢ शब्दानुवाद
- ➢ छायानुवाद या भावानुवाद
- ➢ तथ्यानुवाद

- अक्षरशः अनुवाद/शब्दानुवाद
- इस प्रकार के अनुवाद में वाक्य को महत्व नहीं देकर के शब्दों या अक्षरों को महत्व दिया जाता है।
- स्रोतभाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्यभाषा के प्रत्येक शब्द में यथावत् अनुवादन को शब्दानुवाद कहते हैं।
- अनुवाद करते समय शब्द के स्थान पर उसके समान अर्थ वाले दूसरे शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अनुवाद प्रकार

Sky Educare

- ➢ शब्दानुवाद
- ➢ छायानुवाद या भावानुवाद
- ➢ तथ्यानुवाद

प्रस्तुत अनुच्छेद के भावों के अनुसार अनुवाद होता है।
इसमें वाक्यों का अनुवाद होता है।
विषय वस्तु का अनुवाद करने के लिए उसके भावार्थ को अनुवाद के रूप में अन्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।
इसमें भावभिव्यक्ति पर बल दिया जाता है।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

अनुवाद प्रकार

- शब्दानुवाद
- छायानुवाद या भावानुवाद
- तथ्यानुवाद

इसका दूसरा नाम अर्थानुवाद भी है।
इस तरह के अनुवाद में शब्दानुवाद के साथ भाव का मिश्रण भी कर दिया जाता है ।
इसमें प्रतीत होता है कि यह अनुवाद उसी लेखक ने किया है जिसने मूल अनुच्छेद लिखा है।

अनुवाद शिक्षण की विधियाँ

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

- विशेष पुस्तकें तैयार करके इन पुस्तकों द्वारा अनुवाद की शिक्षा दी जाती है। जैसे – रचनानुवादकौमुदी
- सरल से कठिन की ओर शिक्षण सूत्र का अनुसरण किया जाता है।

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

- एक व्यक्ति मात्र भाषा में बोलता है तथा दूसरा उसका अनुवाद कर लेता है ।
- यह विधि स्कूलों के आलावा भी बड़े-बड़े औपचारिक सम्मेलनों में यह विधि काम में ली जाती है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

तुलना एवं अनुकरण विधि

- इसमें संस्कृत वाक्य बोलकर मातृभाषा या अन्य भाषा में उसके समान भावार्थ का वाक्य बोला जाता है।
- इसमें छात्र दूसरी भाषा के वाक्यों के साथ तुलना करते हैं तथा उनके वाक्यों का अनुकरण करते हैं।

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

मातृभाषा विधि

- किसी भी भाषा को मातृभाषा का सहारा लेकर अनुवाद सिखाना मातृभाषा विधि कहलाती है।

Sky Educare

अनुवाद पाठ योजना :

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

1. प्रस्तावना
2. उद्देश्य कथन
3. प्रस्तुतिकरण
4. मौनवाचन
5. काठिन्यनिवारण
6. मोखिक कार्य
7. श्यामपट्ट कार्य
8. संशोधन
9. समान्यीकरण
10. सिधान्त निरूपण
11. अभ्यास कार्य
12 . गृह कार्य

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

नि:शुल्क PDF

- Sk Katariya
Sky Educare

संस्कृत-अध्यापनस्य

20

अधिगम-साधनानि

शिक्षण सहायक सामग्री

1. दृश्य साधन
2. श्रव्य साधन
3. दृश्य श्रव्य साधन

- Sk Katariya
Sky Educare

अधिगम-साधनानि

- अधिगम की परिस्थितियों का सृजन करने तथा अधिगम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संप्रेषण युक्तियों का चयन किया जाता है, इनको प्रभावशाली बनाने में ***दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री*** के प्रयोग से अधिगम की परिस्थितियों को अधिक प्रभावशाली रूप से उत्पन्न किया जा सकता है और उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति की जा सकती है। दृश्य श्रव्य सामग्री के प्रयोग से छात्र पाठ में अधिक रुचि लेते हैं और सीखने के लिए तत्पर रहते हैं।
- दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग शिक्षण को प्रभावपूर्ण तो बनाता ही है साथ में रोचक भी बनाता है जिसके कारण विषय वस्तु बालकों के लिए स्थाई हो जाती है, क्योंकि बालकों की ज्ञानेंद्रियों को दृश्य श्रव्य-साधन आकर्षित करते हैं, कही गई बात से अधिक महत्व देखी गई वस्तु का होता है, जिसका प्रभाव स्मरणीय और चिरस्थाई होता है।

अधिगम-साधनानि

Sky Educare

उद्देश्य -

- प्राप्त ज्ञान चिरकाल तक बुद्धि में स्थायी रह पाए ।
- छात्रों में पाठ के प्रति उत्सुकता जिज्ञासा रुचि सक्रियता उत्पन्न करना ।
- शिक्षण को स्पष्ट, रुचि पूर्ण एवं आकर्षक बनाना ।

शिक्षण सहायक सामग्री

- दृश्य श्रव्य सामग्री का तात्पर्य शिक्षण के उन साधनों से हैं जिनका प्रयोग करके बालकों की श्रव्य तथा दृश्य ज्ञान इंद्रियों को क्रियाशील किया जा सकता है ताकि वे पाठ के सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा कठिन से कठिन प्रकरणों को सफलतापूर्वक समझ जाते हैं।

वर्गीकरण

श्रव्य साधन

अधिगम-साधनानि

Sky Educare

- इनसे केवल सुना ही जा सकता है।

- रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफ़ोन / लिंग्वाफोन :

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- **रेडियो –**

यह ऐसा साधन है जो सभी विद्यालयों में उपलब्ध हो सकता है, रेडियो द्वारा संस्कृत भाषण वार्तालाप रूपक गीत आदि की शैली से छात्र परिचित होते हैं तथा उनकी दक्षता बढ़ती है, रेडियो द्वारा शैक्षिक पाठकों का प्रसारण किया जा सकता है, **रेडियो प्रसारण कक्षा में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक तथा कम खर्चीला है।**

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

श्रव्य साधन

- *इनसे केवल सुना ही जा सकता है।*

• रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफ़ोन / लिंग्वाफोन :

- **टेपरिकार्डर -** *यह एक ऐसा उपकरण है जिसमें ध्वनि को किसी भी समय भर कर पुनः सुन सकते हैं। पठन, उच्चारण, भाषण आदि के आदर्श रूप इसके द्वारा कक्षा में प्रयुक्त किए जाते हैं जिसे सुनकर बालक अनुकरण करते हैं। किसी जटिल पाठ को अध्यापक द्वारा पढ़ाए जाते वक्त टेप द्वारा रिकॉर्ड किया जा सकता है जिसे पुनः सुनकर अच्छी तरह कंठस्थ किया जा सकता है।* ***सेमिनार, वार्ता, गोष्ठी, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी रिकॉर्ड करके दोबारा सुना जा सकता है इससे अधिगम स्थाई हो जाता है।***

अधिगम-साधनानि
Sky Educare

श्रव्य साधन

- *इनसे केवल सुना ही जा सकता है।*

• रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफ़ोन / लिंग्वाफोन :

- **ग्रामोफ़ोन / लिंग्वाफोन :** *ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफोन रेडियो की भांति शिक्षण का महत्वपूर्ण उपकरण है ।*

दृश्य साधन

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- मानचित्र
- प्रतिरूप
- पोस्टर

- यह अध्यापक का **विश्वसनीय मित्र कहलाता** है। यह शिक्षण को सरल एवं प्रभावी बनाता है। इसका प्रयोग मुख्यतः विषय वस्तु को स्पष्ट करने तथा गृह कार्य देने हेतु किया जाता है। श्यामपट्ट उपयोग की सफलता अध्यापक पर निर्भर करती है। आजकल इंक बोर्ड भी आने लगे हैं जो श्यामपट्ट की जगह ले रहे हैं।

दृश्य साधन

अधिगम-साधनानि

Sky Educare

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- मानचित्र
- प्रतिरूप
- पोस्टर

- पाठ्य पुस्तक कक्षा शिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है।
- यह ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ छात्रों में विषय वस्तु के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं। पाठ्यपुस्तक के द्वारा शिक्षार्थी पढ़ाई गए पाठ का अभ्यास करते हैं।
- ज्ञान को व्यवस्थित करने में छात्रों के मार्गदर्शन के लिए, पढे हुए पाठ का स्मरण करने के लिए एवं कक्षा शिक्षण के दोष दूर करने के लिए इसका उपयोग होता है।

दृश्य साधन

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- मानचित्र
- प्रतिरूप
- पोस्टर

- विषय वस्तु से संबंधित चित्र दिखाकर पाठ को रोचक एवं बालकों के लिए सरल बनाया जा सकता है, इसमें किले भवन कला समार्क वस्तुओं के चित्र एवं आदर्श पुरुषों के चित्र भी शामिल हो सकते हैं चित्र बालकों की जिज्ञासा एवं कल्पना शक्ति को बढ़ाने में मदद करते हैं।

दृश्य साधन

अधिगम-साधनानि

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- मानचित्र
- प्रतिरूप
- पोस्टर

- विषय वस्तु में तुलनात्मक अध्ययन में चार्ट का उपयोग करना चाहिए।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

दृश्य साधन

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- **ग्राफ**
- मानचित्र
- प्रतिरूप
- पोस्टर

- ग्राफ के माध्यम से विभिन्न विषयों के तथ्यों का विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है ग्राफ का उपयोग प्रायः गणित विज्ञान भूगोल अर्थशास्त्र आदि विषयों में अधिक किया जाता है।

दृश्य साधन

अधिगम-साधनानि

Sky Educare
www.skyeducare.com

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- **मानचित्र**
- प्रतिरूप
- पोस्टर

- भाषा शिक्षण में यदि शिक्षक को किसी भौगोलिक या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को विषय वस्तु से जोड़कर स्पष्ट करना हो तो वहां शिक्षक को मानचित्र की सहायता लेनी चाहिए।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

दृश्य साधन

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- मानचित्र
- **प्रतिरूप (Model)**
- पोस्टर

- प्रतिरूप या प्रतिमान किसी वस्तु की उपयुक्त एवं सुविधाजनक दृष्टि से की गई नकल होती है। आकार में बड़े होने तथा दूर होने के कारण कई वस्तुओं, स्थलों का कक्षा कक्ष में प्रदर्शन संभव नहीं है। अतः उसके प्रतिरूप पदार्थ अर्थात् एक जैसे दिखने वाले आकार में छोटे प्रतिमान को कक्षा में छात्रों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। जैसे- इंडिया गेट, कुतुब मीनार, ताज महल।

अधिगम-साधनानि

Sky Educare

दृश्य साधन

- दृश्य का अर्थ है, देखने योग्य।

- श्यामपट्ट
- पाठ्यपुस्तक
- चित्र
- चार्ट
- ग्राफ
- मानचित्र
- प्रतिरूप
- **पोस्टर**

- विभिन्न व्यक्तियों स्थानों घटनाओं तथा वस्तुओं से संबंधित पोस्टर भी एक उपयोगी सहायक सामग्री है।
- पोस्टर किसी एक ही विचार को केंद्र बिंदु मानकर तैयार किए जाते हैं।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

दृश्य श्रव्य साधन

- ✓ टेलीविजन
- ✓ कम्प्यूटर
- ✓ चलचित्र
- ✓ नाटक
- ✓ **स्मार्टफोन**

- संस्कृत भाषा से संबंधित बहुत सारे कार्यक्रम आजकल टेलीविजन
- के माध्यम से प्रसारण किए जाते हैं, विषय वस्तु पर आधारित कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थी विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
- टेलीविजन का प्रयोग रेडियो के स्थान पर भी किया जा सकता है इसके द्वारा हाव भाव के साथ बोलना बातचीत करना भाषण देना कविता पाठ करना अभिनय करना भी सिखाया जा सकता है। ज्ञानवर्धक फिल्मों का प्रदर्शन भी किया जा सकता है।
- संस्कृत समाचारों के प्रसारण द्वारा पूरी दुनिया की खबरों की जानकारी घर बैठे प्राप्त की जा सकती है साथ ही समाचारों से संबंधित चल चित्रों का प्रसारण भी होता है जो की स्मृति को स्थाई बनाता है।

SONY

दृश्य श्रव्य साधन

अधिगम-साधनानि

Sky Educare
www.skyeducare.com

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- ✓ टेलीविजन
- ✓ कम्प्यूटर
- ✓ चलचित्र
- ✓ नाटक
- ✓ **स्मार्टफोन**

- संस्कृत शिक्षण में कंप्यूटर में हेल्पलाइन प्रयोग की जा सकती है दिल्ली में 'गुरु' तथा पूना में 'लीला' नामक कार्यक्रम का निर्माण हुआ है जो कि सभी भाषाओं में प्रयुक्त किया जा सकता है।
- व्याकरण शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग हो सकता है, जैसे - उच्चारण स्थानों को पढ़ाने के लिए चित्रों द्वारा उच्चारण स्थानों का प्रदर्शन, संधि पढ़ाते समय तालिका प्रदर्शन करने के लिए....
- शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग कर उसे रोचक बनाया जा सकता है।
- महाकाव्य एवं संस्कृत नाटकों पर आधारित लघु चित्र कथाओं के माध्यम से पाठ का प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

दृश्य श्रव्य साधन

- ✓ टेलीविजन
- ✓ कम्प्यूटर
- ✓ **चलचित्र**
- ✓ नाटक
- ✓ स्मार्टफोन

- चल चित्र (Movies)
- बालकों को महापुरुषों के जीवन पर आधारित एवं देशभक्ति फिल्में भी दिखाई जा सकती हैं जो बालकों के लिए उपयोगी एवं चरित्र निर्माण वाली हैं।
- बालकों को वास्तविक जीवन के चलचित्र, समाचार आदि दिखाये जा सकते हैं चलचित्र के माध्यम से बालकों को संवाद कौशल का ज्ञान एवं नाटक के तत्वों का परिचय कराया जा सकता है।

दृश्य श्रव्य साधन

अधिगम-साधनानि

Sky Educare

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- ✓ टेलीविजन
- ✓ कम्प्यूटर
- ✓ चलचित्र
- ✓ **नाटक**
- ✓ स्मार्टफोन

- नाटक छात्रों के हृदय में रसानुभूति के साथ साथ संस्कृति तथा संस्कारों का भी ज्ञान कराता है। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है । नाटक विषय वस्तु का अभिनय के द्वारा सजीव चित्रण किया जा सकता है।

दृश्य श्रव्य साधन

- ✓ टेलीविजन
- ✓ कम्प्यूटर
- ✓ चलचित्र
- ✓ नाटक
- ✓ **स्मार्टफोन**

- *शिक्षा में नया आयाम मोबाइल टेक्नोलॉजी जोड़ रही है।*
- *अब स्मार्टफोन का जमाना है, जिसका बहुआयामी उपयोग पढ़ने-लिखने और सीखने के तौर-तरीके को भी बदल रहा है. किस तरह से स्मार्टफोन इन कार्यो को अंजाम देता है, एक अध्ययन में पाया गया कि स्मार्टफोन पर पढ़ाई करने से विद्यार्थियों को खुद पढ़ाई करने में मदद मिलती है उन्हें अवधारणाओं को समझने तथा अध्याय को जल्दी खत्म करने में सक्षम बनाती है अतः इसका प्रयोग करके बच्चों के परिणाम सुधारे जा सकते हैं।*

शिक्षण सहायक सामग्री का महत्व

- *शिक्षण सहायक सामग्रियों से अभिप्रेरणा मिलती है।*
- *ये कठिन से कठिन विषय-वस्तु को सरल, स्पष्ट, रुचिकर एवं सार्थक बना देती है।*
- *ये पठन-पाठन में नवीनता लाती है।*
- *इनके प्रयोग से समय और शक्ति की बचत होती है।*
- *ये रटने की प्रवृत्ति को कम करती है।*
- *ये विद्यार्थियों को पुनर्बलन प्रदान करती हैं।*
- *ये विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं।*
- *ये कक्षा में अनुशासन बनाये रखती हैं क्योंकि ये बच्चों में रुचि पैदा करती है।*

21 संस्कृत शिक्षण विधियाँ

सम्प्रेषण साधन

निःशुल्क PDF

- Sk Katariya
Sky Educare

सम्प्रेषण

- ***संप्रेषण का अर्थ –***
- ***संप्रेषण शिक्षा की रीढ़ की हड्डी है।*** *बिना सम्प्रेषण के अधिगम और शिक्षण नहीं हो सकता। संप्रेषण दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है। सम + प्रेषण अर्थात* ***समान*** *रूप से भेजा गया। संप्रेषण को अंग्रेजी में कम्युनिकेशन कहते हैं।* ***कम्युनिकेशन*** *शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के* ***कम्युनिस*** *शब्द से हुई है। जिसका अर्थ होता है* ***सामान्य*** *बनाना अर्थात संप्रेषण का अर्थ सूचना तथा विचारों का आदान प्रदान करना।*

सम्प्रेषण

➢ ***ई.जी.मेयर के अनुसार संप्रेषण की परिभाषा -***

"संप्रेषण से तात्पर्य एक व्यक्ति के विचारों तथा शक्तियों से दूसरे व्यक्तियों को परिचित कराने से है।"

➢ ***लुईस ए.एलन के अनुसार संप्रेषण की परिभाषा -***

"संप्रेषण अर्थों का एक पूल है।जिसमें कहने सुनने तथा समझने की व्यवस्थित तथा सतत प्रक्रिया रहती है।"

➢संप्रेषण के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं।

- ***शाब्दिक संप्रेषण***

  शाब्दिक संप्रेषण में सदैव भाषा का प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक संप्रेषण दो प्रकार का होता है।

  - **मौखिक संप्रेषण**
  - **लिखित संप्रेषण**

- ***अशाब्दिक संप्रेषण***

  वाणी या ध्वनि संकेत संप्रेषण

प्रमुख-सम्प्रेषण-साधनानि -

1. मुद्रित साधन-

2. अमुद्रित साधन -

प्रमुख-सम्प्रेषण-साधनानि -

1. मुद्रित साधन-

- *स्व-अनुदेशित सामग्री, अन्य मुद्रित सामग्री जैसे - समाचार पत्र, शोध, बुक, वर्क - बुक, शब्दकोश, एनसाइक्लोपीडिया, एटलस ।*

विश्वज्ञानकोश, विश्वकोश या ज्ञानकोश (अंग्रेज़ी: Encyclopaedia) ऐसी पुस्तक को कहते हैं जिसमें विश्वभर की तरह तरह की जानने लायक बातों को समावेश होता है।

प्रमुख-सम्प्रेषण-साधनानि -

2. अमुद्रित साधन -

1. **दृश्य साधन** - *श्यामपट्ट, प्रोजेक्टर*
2. **श्रव्य साधन** - *रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफ़ोन / लिंग्वाफोन*
3. **दृश्य श्रव्य साधन** - *टेलीविजन, कम्प्यूटर, चलचित्र, नाटक, स्मार्टफोन।*

Sky Educare

संप्रेषण की बाधाएं और समस्याएं

1 . **भौतिक असुविधाएँ** - *वातावरण , शोर , खराब स्वास्थ्य एवं ध्यान केन्द्रित नहीं होना ।*

2 . **भाषा सम्बन्धी बाधाएँ** - *गलत उच्चारण , अस्पष्ट शब्द , अनावश्यक शब्द आदि ।*

3 . **मनोवैज्ञानिक बाधाएँ** - *आवश्यकता से अधिक चिन्ता, पूर्वाग्रह से पीड़ित होना, अलाभकारी अनुभव, अपूर्ण जिज्ञासाएँ ।*

4 . **पृष्ठ भूमि से सम्बन्धित बाधाएँ** - *कार्य से पूर्व वातावरण सम्बन्धी बाधाएँ , अधिगम से पूर्व बाधाएँ , सांस्कृतिक भेदभाव आदि ।*

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

पाठ्य-पुस्तक

- पाठ्य पुस्तक से अभिप्राय उस पुस्तक से है जो शैक्षिणिक संस्थान द्वारा किसी कक्षा के लिए या किसी विशेष कोर्स के लिए पढ़ाई हेतु निर्धारित की गई, ऐसी पुस्तक जिसमें पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों तथा जानकारी को छापा गया हो, पाठ्य पुस्तक कहलाती है। इन पुस्तकों के आधार पर परीक्षा करवाई जाती है, जिसमें उत्तीर्ण होने के पश्चात ही विद्यार्थी को अगली कक्षा में भेजा जाता है।

- पाठ्य पुस्तकों का निर्धारण परीक्षा समिति द्वारा जांच कर ही किया जाता है तथा अधिकृत प्रकाशकों को ही इन पुस्तकों के प्रकाशन का कार्यभार सौंपा जाता है।

- विद्यार्थी अन्य पुस्तकों से मदद तो ले सकते हैं परन्तु उन्हें पाठ्य पुस्तक में दिए गए पाठ्यक्रम के आधार पर ही पढ़ाई करनी होती है।

पाठ्य-पुस्तक

- ***पाठ्य पुस्तक शब्द का प्रयायवाची है: अध्ययन पुस्तक।***
- पाठ्य पुस्तक को ***अंग्रेजी में टेक्स्ट बुक*** कहा जाता है।
- पाठ्यपुस्तक सर्वाधिक सुलभ शिक्षण साधन है, हमारी संपूर्ण शिक्षण व्यवस्था पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित है।

पाठ्य-पुस्तक का महत्त्व

- पाठ्य-पुस्तक कक्षा, विद्यार्थी एवं शिक्षक सभी के लिए उपयोगी है तथा एक मार्गदर्शक का कार्य करती है ।
- मनोरंजन, आत्मविश्वास, भाषा पर अधिकार तथा स्वाध्या , पाठ्य - पुस्तक के द्वारा ही सम्भव है ।
- पाठ्य-पुस्तक प्राप्त ज्ञान के स्थायीकरण के लिए अत्यन्त आवश्यक है ।
- पाठ्य-पुस्तक द्वारा गृहकार्य की समुचित व्यवस्था होती है ।
- पाठ्य-पुस्तक से पाठ को पढ़ने में सहायता मिलती है ।
- पाठ्य-पुस्तक से सूचनाओं का एक ही स्थान में संग्रह होता है ।
- पाठ्य-पुस्तक ज्ञान प्राप्ति का सशक्त साधन है ।

पाठ्य-पुस्तक के गुण -

- यह आवश्यक है कि विद्यार्थी कक्षा में बतायी गयी बात को घर पर जाकर पुनरावृत्ति कर लें , पुनरावृत्ति का कार्य **बिना पाठ्य पुस्तक के असम्भव** है ।
- पाठ्य-पुस्तक के द्वारा विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार मानसिक विकास करता है ।
- विद्यार्थियों को कम मूल्य पर सभी आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य एवं सूचनाएँ एक ही पुस्तक में मिल जाती हैं।
- सभी शिक्षक मौखिक शिक्षण में निपुण नहीं हो सकते ।
- सामान्य बुद्धि के शिक्षक के लिए पाठ्य - पुस्तक की सहायता लेना बहुत ही आवश्यक है ।
- मौन पठन का अभ्यास भी पाठ्य - पुस्तकों द्वारा ही होता है ।

पाठ्य-पुस्तक के दोष -

1. पाठ्य - पुस्तकें पढ़कर विद्यार्थी अपना निर्णय निर्धारित करने में असमर्थ रहते हैं ।
2. सभी लेखकों को पाठ्य - पुस्तक में विषय , पाठ्यक्रम के अनुसार निर्धारित करना पड़ता है, जिससे विद्यार्थियों की रुचि की उपेक्षा होती है ।
3. पाठ्य - पुस्तकों के द्वारा विद्यार्थी जीवन की विभिन्न समस्याओं को जानने की क्षमता अपने अन्दर उत्पन्न नहीं कर पाते हैं ।
4. आधुनिक पाठ्य-पुस्तकें विद्यार्थियों के ज्ञान विस्तार के लिए न लिखी जाकर व्यापारिक दृष्टि से लिखी जाती हैं । उनमें सस्ता कागज दिया जाता है तथा छपाई भी विद्यार्थियों की मानसिक आयु के अनुरूप नहीं होती है, तब पाठ्य - पुस्तक व्यापारिक बन जाता है

पाठ्य-पुस्तक की उपयोगिता -

1. पाठ्य-पुस्तक अध्यापक एवं छात्र दोनों का समय बचाती है ।
2. पाठ्य - पुस्तकों के माध्यम से छात्र घर पर भी अध्ययन कर सकते हैं और गृहकार्य करने में भी वे सहायता प्राप्त कर सकते हैं ।
3. पाठ्य - पुस्तकों की सहायता से एक साथ बहुत से छात्रों को पढ़ाया जा सकता है ।
4. पाठ्य - पुस्तकें अध्यापक को कक्षा में आने से पूर्व पाठ की तैयारी करने का अवसर देती हैं ।
5. प्रत्येक अध्यापक मौखिक शिक्षण में निपुण नहीं हो सकता । सामान्य बुद्धि के अध्यापक के लिए पाठ्य - पुस्तकों का सहयोग आवश्यक होता है ।
6. मौन अध्ययन का अभ्यास पाठ्य - पुस्तकों द्वारा ही कराया जा सकता है ।

पाठ्य-पुस्तक के चयन के लिए सावधानियाँ

1. पुस्तक का लेखक – पाठ्य-पुस्तक के चयन में सबसे पहले यह देखना चाहिए कि पुस्तक का लेखक योग्य, अनुभवी तथा उस विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है अथवा नहीं । कभी - कभी जूनियर कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ऐसी पुस्तकों को लिख देते हैं जो कि शिक्षा मनोविज्ञान से पूरी तरह अपरिचित होते हैं । इसलिए पुस्तक लेखक को केवल विज्ञान ही नहीं , बल्कि शिक्षा मनोविज्ञान से भी परिचित होना चाहिए ।

2. पाठ्य वस्तु की जाँच -

I. पाठ्य - पुस्तक में जो कुछ भी विषय रखा जाए उसका व्यक्ति के जीवन की विभिन्न क्रियाओं से सम्बन्ध होना चाहिए ।

II. पाठ्य - वस्तु सरल तथा विभिन्न रुचियों वाली हो । किसी एक बात पर अथवा सिद्धान्त पर आवश्यकता से अधिक जोर देना उचित नहीं है । पाठ्य - पुस्तकों में विभिन्न रुचियों को सम्मिलित करना चाहिए ।

III. पाठ्य - वस्तु की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिए कि पाठों एवं प्रकरणों का परस्पर सम्बन्ध न टूटे ।

(iv) पाठ्य-पुस्तक कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो यदि वह सुव्यवस्थित नहीं होगी तो उसका सरलतापूर्वक पढ़ना तथा समझना कठिन होगा । इसलिए सामग्री को पाठों इकाइयों तथा सोपानों में विभाजित कर लेना चाहिए ।

(v) पाठ्य-वस्तु में विषयों को इस प्रकार रखा जाए कि विद्यार्थियों का नैतिक चारित्रिक विकास हो ।

(vi) पाठ्य - पुस्तक में पाठ्य सामग्री छात्रों की योग्यता तथा मानसिक आयु के अनुसार ही निर्धारित की जानी चाहिए ।

Sky Educare

- ***विषय वस्तु*** *- विषय वस्तु स्तर के अनुसार विभिन्न विषयों से संबंधित प्रकरणों के समुचित क्रम युक्त होनी चाहिए। पाठों का क्रम सरल से कठिन की ओर होना चाहिए, विषय वस्तु का अनुपात या मात्रा इतनी हो कि शिक्षण सत्र में आसानी से पूरी हो जाए।*
- *पाठ्य पुस्तक में* ***गद्य-पद्य, नाटक, कथा*** *आदि सभी विषयों के पाठों का संकलन उचित अनुपात में होना चाहिए।*
- *पाठ्यपुस्तक की भाषा स्पष्ट शुद्ध व सुबोध हो। नवीन शब्दों का परिचय समाहित हो।*
- ***पाठ्यपुस्तक की लेखन शैली*** *अनुकूल होनी चाहिए, उच्च स्तर पर वर्णनात्मक या भाव प्रधान शैली तथा निम्न स्तर पर कथात्मक या संवादात्मक शैली होनी चाहिए, विभिन्न शैलियों का यथाक्रम संतुलित प्रयोग के साथ ही विविधता होनी चाहिए।*
- ***पुस्तक की भीतरी सजावट*** *- पुस्तक की भीतरी सजावट का विशेष ध्यान रखना चाहिए । मुख्य एवं कठिन तथ्यों को सरल तथा स्पष्ट बनाने के लिए चित्रों तथा उदाहरणों का आवश्यकता के अनुसार प्रयोग किया जाना चाहिए । छोटी कक्षा के छात्रों के लिए पुस्तकों में रंगीन आकर्षक चित्रों का संकलन होना चाहिए ।*
- ***पुस्तक की छपाई*** *– पाठ्य-पुस्तकों का मुद्रण छात्रों की आयु के अनुसार किया जाना चाहिए । छोटी कक्षा के छात्रों के लिए निर्धारित की जाने वाली पुस्तकों का मुद्रण ठीक होना चाहिए ।*

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- परिभाषा • विशेषताएं • महत्व
- उद्देश्य • मूल्यांकन के प्रकार
- मापन एवं मूल्यांकन में अंतर

- Sk Katariya
Sky Educare

मूल्यांकन की परिभाषा :-

➤ ***मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ :*** *'मूल्य का अंकन करना या मूल्य का निर्धारण करना'* ।

➤ *जैरोली मेक के अनुसार मूल्यांकन की परिभाषा - "मूल्यांकन वह पद्धति है जिसके द्वारा हम पूर्व निर्धारित उद्देश्यों, ध्येयों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा को निर्धारित करते हैं , यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षण में मूल्यों तथा उद्देश्यों के मध्य तुलना की जाती है। "*

➤ *मूल्य निर्धारण में छात्र को बताया जाता है कि उसके अंको के आधार पर सभी छात्रों के मध्य उसका रैंक (Rank) कहां पर है।* ***अतः मूल्यांकन के अंतर्गत छात्र व्यवहार का परिमाणात्मक तथा गुणात्मक व्यवहार का अध्ययन एवं उसके मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया मूल्यांकन कहलाती है।***

➤ ***संक्षेप में हम कह सकते हैं की 'शिक्षा में उद्देश्यों की कितनी पूर्ति हुई है यह जानना ही मूल्यांकन है।***

मूल्यांकन की परिभाषा :-

➢ ***संस्कृत भाषा शिक्षण के संदर्भ में*** *मूल्यांकन से तात्पर्य भाषा अध्यापक की शिक्षण संबंधी क्रियाओं और इन क्रियाओं के परिणाम स्वरूप छात्रों की उपलब्धियों का मापन करने और उसके आधार पर उनकी सापेक्षिक स्थिति स्पष्ट करने की प्रक्रिया से होता है।*

प्रभावी मूल्यांकन की विशेषताएं :-

Sky Educare www.skyeducare.com

➢ ***वैधता (Validity):*** *जिस उद्देश्य का मूल्यांकन करना हो उस उद्देश्य का मूल्यांकन हो जाता है तो उन साधनों, उपकरणों को वैध का जाता है।*

➢ ***विश्वसनीयता (Reliability):*** *विश्वसनीयता का अर्थ है विश्वास के पात्र अर्थात जब अंको का बदलाव न हो दोबारा से चेक करने पर भी अंक समान रहे वस्तुनिष्ट प्रश्न विश्वसनीय होते हैं। निबंधात्मक प्रश्न विश्वसनीय नहीं होते।*

➢ ***वस्तुनिष्ठता Objectivity):*** *मूल्यांकन पक्षपात रहित होता है। उत्तर के लिखित आधार पर ही मूल्यांकन होता है ना की परीक्षा की दृष्टि के आधार पर होता है। वस्तुनिष्ठता में प्रश्न का अर्थ स्पष्ट होता है उसमें कोई भी भ्रांति नहीं होती है।*

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

प्रभावी मूल्यांकन की विशेषताएं :-

- ***व्यापकता (Comprehensiveness):*** *मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है अर्थात गहराई में मूल्यांकन करते समय किसी भी विषय की गहराई से प्रश्न पूछना आवश्यक है।*
- ***उपयोगिता (Usefulness):*** *अच्छा मूल्यांकन हमेशा जीवन के लिए उपयोगी होता है। यह व्यवहारिक होता है तो प्रशिक्षण एवं जीवन में उपयोग किया जा सकता है।*
- ***विभेदीकरण (Differentiation):*** *मूल्यांकन में बच्चो में विभेद कर सकने की क्षमता होनी चाहिए जिससे की मूल्यांकन की निष्पक्षता बनी रहे।*

- *छात्रों को **अध्ययन की ओर अग्रसित** करता है।*
- *छात्रों के **व्यक्तिगत मार्गदर्शन** में सहायता करता है।*
- *शिक्षण के **उद्देश्यों की प्राप्ति** में सहायक है।*
- *बच्चों की **कमजोरियों को जानने** में सहायक होता है।*
- *शैक्षिक व **व्यवसायिक मार्गदर्शन** में सहायक है।*

मूल्यांकन के उद्देश्य:-

- बच्चों में अपेक्षित **व्यवहार एवं आचरण परिवर्तन की जांच करना।**
- यह जांचना कि बच्चों ने कुशलताओं, योग्यता, आदि को कितना ग्रहण किया है।
- बालकों की सभी कठिनाइयों का निर्धारण करने तथा दोषो को जानना।
- उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करना।
- बालकों के चहुमुखी विकास को निरंतर गति प्रदान करना।
- इससे अध्ययन और अध्यापन दोनों का मापन कर सकते हैं।
- मूल्यांकन द्वारा प्रयोजन, शिक्षण विधियों की उपयोगिता एवं विद्यालय की समस्त क्रियाओं का अंकन करना।

मापन एवं मूल्यांकन में अंतर :-

• मापन	• मूल्यांकन
• मापन का कार्य केवल **अंक प्रदान करना** ही है।	• मूल्यांकन में **अंक प्रदान करने के पश्चात मूल्यों का निर्धारण** भी किया जाता है।
• मापन का अर्थ **वस्तु की मात्रा** से है।	• मूल्यांकन का अर्थ उस **वस्तु के मूल्य** से है।
• किसी एक गुण या चर का मापन	• मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है
• मापन में निश्चित धारणा नहीं बनाई जा सकते हैं।	• मूल्यांकन में कई परीक्षणों के आधार पर बालक के विषय में धारणा बनाए जा सकते हैं।
• समय, धन, श्रम कम लगता है	• मूल्यांकन में समय श्रम तथा धन अधिक तकता है
• मापन में सार्थक भविष्यवाणी संभव नहीं है	• मूल्यांकन में सार्थक भविष्यवाणी संभव है
• मापन का ज्ञान अपूर्ण है	• मूल्यांकन का ज्ञान पूर्ण है
• मापन मूल्यांकन से पहले होता है	• मूल्यांकन मापन के बाद होता है
• मापन के लिए उद्देश्य जानना आवश्यक नहीं।	• मूल्यांकन उद्देश्य आधारित होता है।

मूल्यांकन के प्रकार :-

१. पाठांतर्गत मूल्यांकन
शिक्षण के साथ-साथ

1. उच्चारण
2. वाक्य प्रयोग
3. बोध प्रश्न

२. पाठोपरांत मूल्यांकन
शिक्षण के बाद पश्चात्

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
2. लघुतरात्मक प्रश्न
3. निबंधात्मक प्रश्न

संस्कृत शिक्षण विधियाँ

• मौखिक-लिखितप्रश्नानां प्रकारा:

मूल्याङ्कनम्

24

- Sk Katariya

मूल्यांकन की प्रविधियाँ

विद्यालयों में प्रयुक्त की जाने वाली सभी मूल्यांकन प्रविधियों को प्रमुख रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है -

1. परिमाणात्मक प्रविधियाँ

1. मौखिक परीक्षा
2. लिखित परीक्षा
3. प्रायोगिक परीक्षा

1. वस्तुनिष्ठ 2. निबंधात्मक

2. गुणात्मक प्रविधियाँ

1. जाँच की सूची और स्तर माप
2. अवलोकन या निरीक्षण
3. घटनावृत्त
4. साक्षात्कार

1. परिमाणात्मक प्रविधियाँ

- मूल्यांकन में इस प्रकार की प्रविधियाँ अधिक उपयोगी, विश्वसनीय तथा वैध होती है। ये तीन प्रकार की होती है।

1. मौखिक परीक्षा
2. लिखित परीक्षा
3. प्रायोगिक परीक्षा

मौखिक परीक्षा

- छात्र के ज्ञान के मूल्यांकन की यह विधि मुख्यतः व्यक्तिगत होती मतलब छात्र को अकेले बुलाकर उससे प्रश्न पूंछे जाते हैं। यह मूल्यांकन की **प्राचीन** और **परंपरागत** विधि है।
- **इसमें छात्र से मौखिक रूप से प्रश्न करके उसके ज्ञान, अभिव्यक्ति की क्षमता और उसके आत्मविश्वास को परखा जाता है।**
- मौखिक प्रश्न पूछते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए-

1.लम्बे उत्तरों वाले प्रश्नों को नहीं पूछना चाहिए
2.प्रश्न में द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए
3.छात्रों को उत्तर देते समय, बीच में नहीं टोकना चाहिए
4.लम्बी शब्दावली वाले प्रश्नों से बचना चाहिए

मौखिक परीक्षा के भेद -

Sky Educare

1. **शलाका परीक्षा** – *इसमें परीक्षण करता शलाका की सहायता से किसी पृष्ठ से प्रश्न या पंक्ति को पूछता है , छात्र मौखिक ही तुरंत उत्तर प्रदान करता है। इसका उद्देश्य छात्र की चिंतन मनन शक्ति का विकास समरण शक्ति का विकास एकाग्रता स्थापना हेतु किया जाता है।*
2. **शास्त्रार्थ** - ***किसी विषय पर तर्क वितर्क करके निर्णय करना शास्त्रार्थ है। प्राचीन समय में आचार्य शिष्यों की परीक्षा हेतु ग्रंथ के किसी भी समस्या को प्रस्तुत कर छात्रों को अपने अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित करते थे।***
3. **साक्षात्कार** - *साक्षात विषय वस्तु और विषय वस्तु की पृष्ठभूमि से संबंधित अवधारणात्मक तथा तथ्यात्मक प्रश्न पूछना ही साक्षात्कार है।*
4. **भाषण** - *परीक्षक छात्रों के समक्ष पूर्व निर्धारित विषय को प्रस्तुत करके उसे संक्षिप्त रूप से बोलने के लिए कहता है। भाषण छात्रों के भाषण कौशल परीक्षण हेतु उपयोगी है।*
5. **अंताक्षरी** - *अंताक्षरी के द्वारा परीक्षण (शब्दान्ताक्षरी एवं श्लोकांताक्षरी)*

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

Sky Educare

लिखित परीक्षा

- इसमें छात्रों के परीक्षण हेतु प्रश्न लिखित रूप में दिए जाते हैं तथा छात्र प्रश्नों के उत्तर भी लिखित रूप में ही देते हैं। **इसका उद्देश्य छात्रों के लेखन कौशल का परीक्षण करना होता है।**

- **लिखित परीक्षा दो प्रकार की होती है -**

1. वस्तुनिष्ठ

2. निबंधात्मक

Sky Educare

लिखित परीक्षा

1. वस्तुनिष्ठ -

इस परीक्षा में निश्चित उत्तर वाले प्रश्नों को समाहित किया जाता है। ***अतः इस परीक्षा को अधिक विश्वसनीय वैध व व्यवहारिक माना गया है।*** *इस परीक्षा में कम समय में छात्रों का परीक्षण किया जा सकता है। विश्वसनीय परिणाम मिलते हैं। ज्ञान को स्थायित्व मिलता है* ***लेकिन - इस तरह के परीक्षण में लेखन शैली, निरीक्षण शक्ति व कल्पना शक्ति का परीक्षण संभव नहीं है।***

वस्तुनिष्ठ के भेद

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

लिखित परीक्षा

1) वस्तुनिष्ठ
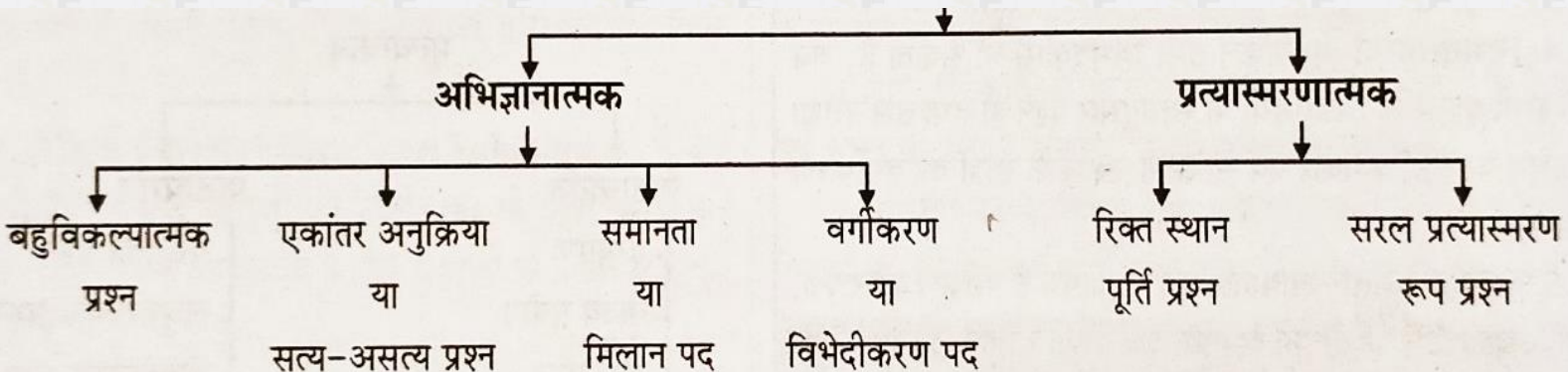
I. **अभिज्ञानात्मक प्रश्न** - अभिज्ञानात्मक प्रश्न में वे प्रश्न सम्मिलित होते हैं जो छात्रों की अभिज्ञान शक्ति (पहचान शक्ति) का परीक्षण करते हैं ।

I. **बहुविकल्पात्मक प्रश्न** - इन प्रश्नों में बहुत विकल्प (सामान्यतः 4 विकल्प) दिये होते हैं जिनमें से सही विकल्प को छात्र द्वारा पहचानना होता है । वर्तमान में सर्वाधिक प्रयुक्त , वैध व विश्वसनीय परीक्षा प्रणाली मानी जाती है ।

II. **सत्य - असत्य रूप प्रश्न** (एकान्तर अनुक्रिया रूप प्रश्न) - इन प्रश्नों में कुछ कथन दिये होते हैं जिनमें छात्रों को सही कथन के आगे (✓) का निशान तथा गलत कथन के आगे (x) निशान लगाना होता है ।

III. **मिलान पद प्रश्न (समानता पद)** - इसमें प्रश्नों को दो स्तभों में अव्यवस्थित रूप से लिखा जाता है । छात्र सही पदों को मिलाता है ।

लिखित परीक्षा

➢ वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों / परीक्षाओं के गुण : -

1 . विश्वसनीयता
2 . पूर्वाग्रहों से मुक्ति
3 . वस्तुनिष्ठता
4 . विभेदनशीलता
5 . अंकन में शीघ्रता
6 . परीक्षण में कम समय
7. इस प्रकार के परीक्षणों को बनाने एवं व्यवहार में लाने में व्यापकता पायी जाती हैं ।

➢ वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों के दोष :

1 . इस प्रकार के प्रशिक्षण के निर्माण हेतु विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती हैं ।
2. अनुमान आधारित उत्तर ।
3 . अधिक लागत ।
4 . लिखित अभिव्यक्ति का ह्रास ।
5 . सृजनात्मक चिन्तन , विचार , दृष्टिकोण एवं भाषायी कौशल का परीक्षण करना संभव नहीं ।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

लिखित परीक्षा

1) वस्तुनिष्ठ

Sky Educare

2. प्रत्यास्मरणात्मक प्रश्न - इनके द्वारा छात्रों की स्मरण शक्ति का परीक्षण किया जाता है । छात्र स्मरण या धारणा के आधार पर उत्तर देता है या अपूर्ण कथन को पूर्ण करता है ।

i. **(क) रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न** - इनमें छात्र दिए गए कथन के रिक्त स्थान को उचित शब्द द्वारा पूर्ण करता है ।

ii. **(ख) सरल प्रत्यास्मरण प्रश्न** - लघ प्रश्न जिसका उत्तर भी संक्षिप्त ही होता है । जैसे- विलोम शब्द लिखिए ।

2. निबंधात्मक परीक्षा

लिखित परीक्षा

Sky Educare

- **निबन्धात्मक परीक्षा/वर्णनात्मक** परीक्षा प्राचीन व परम्परागत परीक्षा प्रणाली है जिसमें प्रश्नों के उत्तर निबंध रूप में दिये जाते हैं ।
- इसका **प्रमुख उद्देश्य** छात्रों के भाषा कौशलों , भाषा शैली , मानसिक या बौद्धिक तर्क चिन्तन व कल्पना शक्ति , भाषायी ज्ञान , लेखन कौशल तथा अभिव्यक्ति कौशल का परीक्षण करना है । यह अधिक वैध व विश्वसनीय नहीं है क्योंकि इसमें जाँचकर्ता के स्वभाव व दृष्टिकोण की प्रधानता होती है ।
- प्रश्नों के उत्तर असीमित , अनिश्चित व वर्णनात्मक होते हैं जिनका मूल्यांकन कठिन व अलग अलग रहता है ।

  - **निबन्धात्मक परीक्षा में प्रश्न प्रकार -**
  - **अतिलघूत्तरात्मक - एक पंक्ति या 2 , 3 शब्दों में उत्तर**
  - **लघूत्तरात्मक - निर्धारित पंक्ति या शब्दों में उत्तर**
  - **निबन्धात्मक - वर्णनात्मक उत्तर विस्तृत उत्तर**

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

➢ निबन्धात्मक परीक्षणों के गुण -

1. सृजनात्मक चिन्तन, कल्पनाशक्ति, निर्णय शक्ति, स्मरण शक्ति का पता लगाने में सहायक।
2. व्यक्तिगत विचारों का पता लगाने में सहायक।
3. परीक्षण को बनाने में सरलता व कम लागत।
4. अध्यापकों हेतु सामान्य प्रशिक्षण की आवश्यकता।
5. विद्यार्थियों को स्वतंत्र एवं संगठित रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर

➢ निबन्धात्मक परीक्षा के दोष -

1. विश्वसनीयता का अभाव -
2. अंकन में समय अधिक लगता है
3. वैधता का अभाव
4. व्यापकता का अभाव। अर्थात् इस प्रकार के परीक्षणों में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को सम्मिलित नहीं किया जा सकता।
5. रटन्त प्रवृत्ति को बल व्यक्तिनिष्ठता (परीक्षण पर प्रश्न का निर्माता के व्यक्तित्व, विचारधारा का प्रभाव)

➢ 3. प्रायोगिक परीक्षा / क्रियात्मक परीक्षा -

इन परीक्षाओं का प्रयोग छात्रों की दक्षता या कौशल परीक्षण में किया जाता है। इनमें छात्रों को कछ कार्य करने के लिए दिये जाते हैं। इन परीक्षाओं में भी विश्वसनीयता का अभाव रहता है क्योंकि शिक्षकों द्वारा भेदभाव की संभावना रहती है।

गुणात्मक प्रविधियाँ

- *गुणात्मक परीक्षाएं आंतरिक मूल्यांकन हेतु काम में ली जाती हैं।*

1. जाँच की सूची और स्तर माप
2. अवलोकन या निरीक्षण
3. घटनावृत्त
4. साक्षात्कार

Sky Educare

- ***जाँच सूची और स्तर माप :-***
  - *जाँच सूची का उपयोग छात्र के प्रयोगात्मक ज्ञान, अभिवृत्तियों, रुचियों, अवधारणाओं और मूल्यों आदि के सम्बन्ध में उपलब्धियों का पता लगाने के उद्देश्य से किया जाता है। जबकि स्तर माप के माध्यम से यह जाना जाता है कि किसी छात्र के कुछ विशिष्ट गुणों ने अन्य छात्र एवं शिक्षकों पर क्या प्रभाव डाला है।*

- ***अवलोकन या निरीक्षण :-***
  - *किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार को कुछ निश्चित समय के लिए देखना और उसके व्यवहार के कुछ बिंदुओं को दर्ज करना अवलोकन है। अवलोकन को सही तरीके से दर्ज करने के लिए अवलोकनकर्ता, चैकलिस्ट, अवलोकन चार्ट, मापनी परीक्षण आदि उपकरणों का प्रयोग करता है।*

अधिक उन्नत एवं समर्पित कोर्स के लिए – Download Mobile App Download

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

Sky Educare

- **घटनावृत्त :-**
    - घटनावृत्त शिक्षार्थियों के जीवन की सार्थक घटना का विवरण या कोई ऐसी घटना जो अवलोकन करने वाले की दृष्टि में शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो या शिक्षक के द्वारा अनुभव किया गया विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षार्थियों का वास्तविक व्यवहार हो सकता है।

- **साक्षात्कार :-**
    - साक्षात्कार विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में व्यक्तियों से सूचना संकलन का सर्वाधिक प्रचलित साधन है। साक्षात्कार में व्यक्तियों को आमने-सामने बैठाकर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके आधार पर उनकी योग्यताओं का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए किए जाने वाले साक्षात्कार को मौखिकी के नाम से जाना जाता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्याङ्कन

परिचय:

- सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) वर्ष 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत अनिवार्य मूल्यांकन प्रक्रिया है। मूल्यांकन का यह दृष्टिकोण भारत में छठी से दसवीं कक्षा और कुछ विद्यालयों में बारहवीं के छात्रों के लिए राज्य सरकारों के साथ-साथ केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पेश किया गया था।

Sky Educare

अभिप्राय -

- सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) Continuous and comprehensive evaluation छात्रों के विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की एक प्रणाली है जिसमें छात्रों के विकास के सभी पहलू शामिल हैं। यह मूल्यांकन की एक उन्नतशील प्रक्रिया है जो दोहरे उद्देश्यों पर बल देती है।

- यहां सतत और व्यापक से तात्पर्य विद्यार्थी की शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों का निरंतर अथवा नियमित रूप से मूल्यांकन से है। अर्थात **विद्यालय आधारित एक ऐसी मूल्यांकन विधि है जो विद्यार्थियों के विकास के सभी पक्षों से संबंधित है तथा निरंतर प्रक्रिया है।** इस हेतु विभिन्न पर विधियों की सहायता अध्यापक लेता है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के लक्ष्य:

- सी.सी.ई का मुख्य उद्देश्य बच्चे की विद्यालय में उपस्थिति के दौरान उसके हर पहलू का मूल्यांकन करना है।
- सी.सी.ई का उद्देश्य बच्चों के तनाव को कम करना है।
- मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाना।
- रचनात्मक शिक्षण के लिए शिक्षक को स्थान प्रदान करना।
- निदान और उपचार के साधन प्रदान करना।
- बृहद् कौशल वाले शिक्षार्थियों का निर्माण करना।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य:

- **विद्यार्थियों का कार्यभार कम करना तथा उन्हें परीक्षा के तनाव से मुक्त करना।**
- बालकों का सर्वांगीण विकास मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार करना।
- छात्रों को अधिक से अधिक सह शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- अधिगम के दौरान आने वाली समस्याओं के निदान हेतु उपचारात्मक शिक्षण।
- आत्म-मूल्यांकन के लिए शिक्षार्थियों को अवसर प्रदान करना।
- निदान और उपचार के माध्यम से छात्र की उपलब्धि में सुधार के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया का उपयोग करना।

सतत और व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएं:

- सी.सी.ई का **'सतत'** पहलू मूल्यांकन के **'निरंतर'** और **'आवधिक'** पहलू का ध्यान रखता है।
- सी.सी.ई का **'व्यापक'** घटक बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के मूल्यांकन का ध्यान रखता है।
- इसमें विद्यार्थी के विकास के **शैक्षिक के साथ-साथ सह-शैक्षिक** पहलुओं का मूल्यांकन शामिल है।
- शैक्षिक पहलुओं में पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्र या विषय विशिष्ट क्षेत्र शामिल हैं, जबकि सह-शैक्षिक पहलुओं में जीवन कौशल, सह-पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियां, दृष्टिकोण और मान्यताएं शामिल हैं।
- सह-शैक्षिक क्षेत्रों में मूल्यांकन पहचान मानदंडों के आधार पर कई **तकनीकों का उपयोग** करके किया जाता है, जबकि जीवन कौशल में आकलन और परीक्षण सूची के संकेतकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के कार्य:

- सी.सी.ई शिक्षक को **प्रभावी शिक्षण** की रणनीतियों को व्यवस्थित करने में सहायता करता है।
- सतत मूल्यांकन कमजोरियों का **निदान करने में सहायता** करता है और शिक्षक को कुछ व्यक्तिगत शिक्षार्थियों की जांच की अनुमति देता है।
- सतत मूल्यांकन के माध्यम से छात्र अपनी शक्तियों और कमजोरियों को जान सकते हैं।
- सी.सी.ई दृष्टिकोण और मान्यता प्रणाली में **परिवर्तन की पहचान** करने में मदद करता है।
- सी.सी.ई छात्रों की शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में प्रगति पर **जानकारी प्रदान** करता है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षार्थियों की **भविष्य की सफलता का पूर्वानुमान** होता है।

सतत मूल्यांकन की विधियां

- सत्र परीक्षा
- इकाईपरीक्षा
- मासिक परीक्षाएं
- सेमेस्टर पद्धति

सतत मूल्यांकन के क्षेत्र

- छात्र की अभिरुचि
- छात्र की सृजनात्मकता
- ज्ञान
- परिवारिक रुचियां
- बोध
- वैयक्तिक रुचियां
- शारीरिक स्थिति तथा स्वास्थ्य
- अनुप्रयोग
- विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि
- विद्यार्थी की त्रुटियां

अधिक उन्नत एवं समर्पित कोर्स के लिए – Download Mobile App Download
Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पक्ष

- **संज्ञानात्मक पक्ष** – संज्ञानात्मक पक्ष के अंतर्गत बालक के अंदर निहित ज्ञान ,स्मरण ,पुनः स्मरण आदि चीजें सम्मिलित होती हैं। जिनका मूल्यांकन किया जाता है।
- **भावनात्मक पक्ष** – इसके अंतर्गत बालक के भाव पक्ष, दया करुणा सत्य निष्ठा आदि का मूल्यांकन किया जाता है।
- **कौशलात्मक पक्ष** – इसमें निहित कार्यकुशलता कार्य करने की क्षमता आदि का मूल्यांकन किया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ –

*शिक्षा जगत में **उपचारात्मक शब्द** चिकित्सा शास्त्र से लिया गया है, जिस प्रकार एक डॉक्टर विभिन्न परीक्षणों के द्वारा रोगी के रोग का कारण का पता लगाकर उसकी उचित चिकित्सा करता है। ठीक उसी प्रकार **एक कुशल शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों तथा प्रविधि, परीक्षणों, निरीक्षण वा वार्तालाप के आधार पर शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े व कमजोर बच्चों की कठिनाइयों का पता लगाकर उसको उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा कठिनाइयों को दूर करके विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता में वृद्धि करता है सामान्य बालकों की श्रेणी में लाने का प्रयास करता है ।***

उपचारात्मक शिक्षण की परिभाषा

- **योकम व सिम्पसन अनुसार उपचारात्मक शिक्षण की परिभाषा**

“उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है, जो छात्र को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करें।”

- *पहले प्रत्येक छात्र को समान समझ कर छात्रों की प्रगति पर ध्यान दिए बिना शिक्षा दी जाती थी। जिससे कुछ विद्यार्थी प्रगति कर लेते थे और कुछ पिछड़ जाते थे। इन पिछड़े विद्यार्थियों की उपेक्षा की जाती थी। मनोविज्ञान के अनुसार सभी विद्यार्थियों के सीखने और समझने की शक्ति एक समान नहीं होती। नवीन शिक्षा पद्धति में इन विद्यार्थियों के सीखने में होने वाली कठिनाईयों का पता लगाने की प्रक्रिया **‘निदानात्मक’** शिक्षण के नाम से जानी जाती है। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए किया जाने वाला शिक्षण ‘**उपचारात्मक शिक्षण**’ है।*

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

उपचारात्मक शिक्षण तथा इसका महत्व

- निदानात्मक शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को सीखने में आने वाली कठिनाइयों का पता चल जाता है।
- उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा उन कठिनाईयों को दूर करके विद्यार्थी के व्यक्तिगत विकास को बल दिया जाता है।
- छात्रों की हीन भावना दूर करने में उपचारात्मक शिक्षण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- 'उपचारात्मक शिक्षण' शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है।
- उपचारात्मक शिक्षण अच्छे शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य

- छात्रों की अधिगम सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करना।
- छात्रों की ज्ञान सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करके , उनको आने वाले समय मे होने वाले दोषो से मुक्त करना।
- छात्रों के दोषपूर्ण आदतों,मनोवृत्तियों को समाप्त करके उनकी अच्छी आदतों को सीखना।
- छात्रों को उन अच्छी आदतों को सीखना जो आज तक सीखी नही गयी है।
- उत्तम भाषा प्रयोग की क्षमता प्रदान करना।
- समय एवं शक्ति का संरक्षण।
- मंदबुद्धि बालकों में आत्मविश्वास बढ़ाना।
- संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर पाठन।

उपचारात्म विधियाँ / उपाय

1 . छात्रों की त्रुटियों को यदा - कदा सही करना।
2 . छात्र के अधिगम संबंधी दोषों का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन कर, उनको दूर करने का उपाय बताना।
3 . व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर समूह में विभाजित कर शिक्षण की व्यवस्था करना।
4 . आवश्यकतानुसार शिक्षा देना।
5 . अधिगम संबंधी दोष, कमजोरियों और बुरी आदतों का निदान करना।

उपचारात्मक शिक्षण के क्षेत्र

Sky Educare

1 . वाचन या पाठन
2 . लेखन
3 . उच्चारण
4 . भाषा या व्याकरण
5 . अङ्कगणित

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया

1 . प्रत्येक छात्र के स्तर के अनुसार उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए।

2 . प्रत्येक सप्ताह छात्र की प्रगति की जाँच होनी चाहिए।

3 . छात्र में यदि दोष दिखाई दे तो उन्हें प्रदर्शित नहीं करना चाहिए , क्योंकि इससे हीन भावना जागृत होती है। उसकी हीनभावना का प्रभाव उसके अधिगम पर पड़ेगा।

उपचारात्मक शिक्षण निर्माण प्रक्रिया

1 . निदानात्मक परीक्षणों में छात्रों के द्वारा की गई त्रुटियों का विश्लेषण अवश्य करना चाहिए।

2 . त्रुटियों के आधार पर अलग - अलग अभ्यासों का निर्माण करना | चाहिए।

3 . विशेष सामग्री के आधार पर त्रुटियों के प्रकार एवं उनके कारण जानने चाहिए।

4 . अध्ययन के अनुसार ही अभ्यास - माला का निर्माण होना चाहिए।

5 . एक ही प्रकार की त्रुटि के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास प्रश्न होने चाहिए।

❑ Video निम्नलिखित किसी भी टॉपिक को क्लिक करें और सीधे उसी टॉपिक Video पर पहुंचे ।

✓संपूर्ण "संस्कृत शिक्षण विधियाँ PDF के लिए क्लिक करें -

❑ निचे दी गयी किसी भी विधि का वीडियो प्राप्त करने के लिए यहीं पर निचे उस विधि के नाम पर क्लिक करें -

✓संपूर्ण "संस्कृत शिक्षण विधियाँ PDF के लिए क्लिक करें -